पास्टर संतोष जेम्स

www.gracetabernaclehyd.org

(तीतुस 2:1) - "पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।"
(2 तीमुथियुस 4:3) - "क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश ना सह सकेंगे....।"

विषय- क्या हम परमेश्वर का सिर्फ इस्तमाल करते हैं?(Do we use God?)

प्रार्थना:

पिता! आज जब हम यहाँ आपके नाम से उपस्थित हैं तो उसका कारण सिर्फ एक ही है कि हमारा हृदय वचन के पानी से धुल जाये। आप हमें साफ़ करे, तरोताजा करे, और हमें सामर्थ प्रदान करे ताकि हम संसार में जाकर आपकी गवाही ठहरे। हमें सिर्फ इतना करना है कि आपके वचन में दृढ़ खड़े रहना है। मैं प्रार्थना करता हूँ पिता कि आपका वचन आज हमसे बातचीत करे, हमारे हृदय को छुए ताकि आने वाले हफ्तों में चाहे हम इस संसार में कहीं भी क्यों न हो, आपके वचन को अपने जीवन में कार्य करता देख पाए, क्योंकि आपका वचन कहता है कि जो परमेश्वर पर विश्वास करते है उनमें आपका वचन सामर्थी रूप से कार्य करता है। हर समय ये बात हमें याद रहे और हम विश्वास कर सके। पिता मैं प्राथना करता हूँ हर एक जो यहाँ उपस्थित हैं और उन जगहों में जहाँ सभाएं चल रही हैं कि पवित्र आत्मा का अभिषेक बहुतायत से हो और लोग छुए जाए। तेरे सेवक पवित्र आत्मा के सामर्थ में खड़े हो सके। आपका वचन आगे आगे जाए और आपकेयोजना को पूरा करे। प्रभु यीशु के पवित्र नाम में मांगते हैं, ***आमीन।***

पिछले कुछ समय से हम शमूएल की पुस्तक का अध्ययन करते आ रहे हैं और यह देख रहें हैं कि यह आज के युग में कैसे प्रयोग होता है। हम सिर्फ शमूएल का अध्ययन नहीं कर रहे हैं। हमने देखा कि शमूएल बढ़ रहा है पर वह अभी भी छोटा हैं। शमूएल की गवाही इस्राएल में अभी भी छोटी है। बहुतेरे लोग का ध्यान अभी तक शमूएल पर नहीं पड़ा, उन्हें सिर्फ एली याजक दिख रहा है। उसकी पुरोहिताई बहुत बड़ी है और पूरे राज्य की कार्यप्रणाली में उसका दबदबा है और उसका नेतृत्व तीन लोग कर रहे -एली और उसके दो पुत्र होप्नी और पिन्हास। पर उस समय या काल की अवस्था हमें पहले पद में मिलती है,

1 शमूएल 3:1

[1].... और उन दिनों में यहोवा का वचन दुर्लभ था; और दर्शन कम मिलता था।

उन दिनों में स्पष्ट प्रकाशन नहीं था। जीवित वचन दुर्लभ था। उनके पास मूसा की पाँच पुस्तकें तो थी पर परमेश्वर का जीवित वचन दुर्लभता से प्राप्त होता था। किसी ने भी व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर से नहीं सुना, मुझे यह नहीं मालूम कि लोग परमेश्वर से पूछने या बात करने की इच्छा रखते थे या नहीं, परन्तु किसी ने कभी परमेश्वर से कुछ नहीं सुना। और परमेश्वर इसके विषय में यही तो कहते हैं कि अंत के दिनों में भक्ति बिना सामर्थ की होगी और ऐसे ही अंतिम युग के बारे में वर्णन किया गया है। अगर आप रूपरेखा(पैटर्न) का अध्ययन करें, तो जब आत्मिक अगुवे अनैतिक हो जाएँ और लोग परमेश्वर और उसके वचन की परवाह न करने लगे तो परमेश्वर क्योकर उनसे बातें करे? इसलिए परमेश्वर ने सिर्फ एक छोटे बच्चे से बातें की। मत्ती 18:1-3 में, परमेश्वर कहते हैं कि किस तरह हमे उनके सन्मुख जाना चाहिए।

मत्ती 18:1-3 [1]उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन हैं? [2]इस पर उसने एक बालक को पास बुलाकर उन के बीच में खड़ा किया। [3]और कहा ,मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम न फिरो और बालकों के सामान न बनो तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे।

परमेश्वर फिर इस बात को यहाँ दोहराते हैं,

लुका 18:17

[17]मैं तुमसे सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक की नाई ग्रहण नहीं करेगा वह उसमे कभी प्रवेश करने न पायेगा।

मत्ती 11:25

[25]उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता,स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तूने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।

शमूएल की ओर संकेत करते हुए परमेश्वर कहते हैं, कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हम कितनी आयु के क्यों न हो, या वचन का ज्ञान हमें कितना है या सिद्धांतों में हम कितने निपुण हैं; जब भी हम परमेश्वर के पास जाए, एक बालक के समान बनकर जाएँ। प्रभु के लिए नहीं बल्कि हमारे लिए यह सिद्धांत हैं। प्रभु के पास किसी भी सिद्धांत के आधार पर न जाएँ, कभी भी ऐसा न करें। **जब भी हम प्रभु के पास जाएँ तो एक बालक के समान जाएँ और उनसे सुने।** कभी भी परमेश्वर को यह न कहें कि उन्हें क्या करना चाहिए या उन्हें किस प्रकार से आपकी इच्छा पूरी करनी चाहिए। आप एक छोटे बालक की तरह जाएँ। इसलिए पूरे इस्राएल में जब परमेश्वर ने बात करनी चाही तो उस बालक शमूएल के अलावा उन्हें कोई नहीं मिला। उन्होंने एली से नहीं, होप्नी से नहीं, पिन्हास से नहीं तथा किसी लेवी या याजक से बात नहीं की। परमेश्वर को सिर्फ एक व्यक्ति मिला जिससे वो बातचीत कर सकते थे और वो था बालक शमूएल। याजक समाज का नेतृत्व एली याजक के कन्धों पर था और शमूएल ने सुना कि परमेश्वर का न्याय आने पर था। इसका अर्थ यह हुआ कि सब प्रकार की धार्मिकता होने के बावजूद हम प्रभु से नहीं सुनते हैं। हम यहाँ प्रभु के न्याय को प्रारंभ होते हुए देखते हैं और यह भी देखते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों के न्याय के लिए उन्ही के विरुद्ध में उनके दुश्मनों को खड़ा करते हैं। कई बार हम यह नहीं समझ पाते कि परमेश्वर ने ऐसा किया है। हम प्रार्थना करने लगते है, "प्रभु मेरे दुश्मन मेरे विरोध में है" और परमेश्वर कहते हैं, "मैंने आप ही इन्हें तेरे विरुद्ध खड़ा किया है। मैंने उन्हें तेरे विरुद्ध इस कारण भेजा है कि इसके द्वारा मैं उस विरोध और पाप को जो तुम में हैं उसका उपचार कर सकूं।" जब आपका मैनेजर आप पर क्रोधित होता है, आप प्रभु से प्रार्थना करने लगते हैं, "प्रभु मेरा मैनेजर मुझ पर क्रोधित क्यों हैं, मेरी सहायता कीजिए।" परमेश्वर कहते हैं, "मैंने ही तुम्हारे मैनेजर को तुम्हारे विरुद्ध किया है ताकि मैं तेरे अन्दर उस विरोध का उपचार कर सकूं, क्योंकि अगर मैं इसका उपचार यहाँ न करूँ तो तुम इस समस्या को लेकर मेरे भवन में आओगे।" इसलिए आप 1 शमूएल 4:1 में देखेंगे कि दुश्मन आ गए हैं.....

1 शमूएल 4:1 - [1].....और इस्राएली पलिश्तियों से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेज़र के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियों ने अपेक में छावनी डाली।

अब आप गौर करें कि अध्याय 4 की शुरुआत कैसे होती है,

1 शमूएल 4:1 - [1] और शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा।

यह वचन क्या कहता हैं? *शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा।* यह नहीं कहता, "सारा इस्राएल शमूएल के पास पहुंचा।" दोनों में बहुत अंतर है। जब इस्राएल शमूएल के पास आता है तो इसका अर्थ यह होगा कि वे लोग शमूएल के पास प्रभु का मार्गदर्शन के लिए आये है। जब परमेश्वर शमूएल से बात करते है तो इसका अर्थ यह है कि मैं इस बालक शमूएल के माध्यम से तुम लोगों से बाते कर रहा हूँ, अब यह तुम पर निर्भर है कि तुम सुनो या न सुनो।" इसका अर्थ है की जब युद्ध शुरू हुआ और सारे पलिश्ती जमा हुए तो हम पाएँगे कि परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए कोई भी शमूएल के पास नहीं गया। वे नही गए। वे नहीं जाएँगे। समस्या की घड़ी में जिसके पास उन्हें जाना चाहिए था वो व्यक्ति धर्म का प्रतिनिधि नहीं; बल्कि वह व्यक्ति होना चाहिए जिसके पास परमेश्वर का जीवित वचन पहुँचता हो। उसके पास जवाब होगा। परन्तु वे उसके पास नहीं जाते। उन्होंने उसकी उपेक्षा की। इसके बावजूद कि

परमेश्वर का वचन शमूएल के द्वारा आता है, इस्राएल शमूएल के पास नहीं गया। तो जब इस्राएली युद्ध में जाते है, तो बाइबिल यह बताती है,

1 शमूएल 4:1-2 - [1].....और इस्राएली पलिश्तियो से युद्ध करने को निकले; और उन्होंने तो एबेनेज़र के आस-पास छावनी डाली, और पलिश्तियो ने अपेक में छावनी डाली। [2]तब पलिश्तियो ने इस्राएल के विरुद्ध पांति बाँधी, और जब घमासान युद्ध होने लगा तब इस्राएली पलिश्तियो से हार गए, और उन्होंने कोई चार हज़ार इस्राएली सेना के पुरुषों को मैदान ही में मार डाला।

पहला दिन ख़राब बीता। जब हम युद्ध के लिए जाते है तो बाहरी धार्मिकता सही जान पड़ता है पर उसमे कोई सामर्थ और परमेश्वर की उपस्थिति नहीं होती। वे लोग कहाँ खड़े थे? वे लोग एबेनेज़र के बिलकुल निकट खड़े थे।" "एबेनेज़र" का अर्थ होता है "सहायता की चट्टान"(Rock of help)। पर वहां कोई सहायता नहीं पहुंची। आप बिलकुल एक प्रतीक या चिन्ह के निकट हो सकते हैं, एबेनेज़ेर The Rock of Ages। पर वहां किसी भी प्रकार की सहायता नहीं है। आपके पास हर प्रकार के सही लेबल, प्रतीक या चिन्ह हो सकते हैं पर सवाल यह है कि क्या परमेश्वर आपकी रक्षा के लिए आयेंगे? क्या वह चट्टान आपकी मदद करेगा? दुश्मनों ने अपेक में छावनी डाली। अपेक का अर्थ होता है - मजबूत गढ़, किला। दुश्मन तमाम प्रकार के मजबूत गढ़ बनाकर उसी के द्वारा आपके विरुद्ध चढ़ाई करती है। दुश्मन यूँ ही नहीं आता, वो मजबूत गढ़ बनाकर आता है। और हम प्रतीक या चिन्ह के साथ आते हैं जिसका कोई मतलब नहीं जब तक कि परमेश्वर वहाँ न हो। वाकई में इन चिहों का कोई मतलब नहीं है। पहली लड़ाई में 4000 इस्राएली मारे गए। इसे आत्मिक रीति से देखिये; **जब हम आत्मिक युद्ध खो देते हैं तो यह एक चतावनी है कि हम दौड़कर अपने परमेश्वर के पास वापस जायें।** उस स्थान पर वापस जाए जहाँ से परमेश्वर की आवाज़ सुनाई देती है। उन लोगों को शमूएल के पास जाना चहिये था, परन्तु उन्होंने क्या किया?

1 शमूएल 4:3 - [3]और जब वे लोग छावनी में लौट आए, तब इस्राएल के वृद्ध लोग कहने लगे, कि यहोवा ने आज हमें पलश्तियों से क्यों हरवा दिया है? आओ, हम यहोवा के वाचा का संदूक शीलो से मांग ले आए, कि वह हमारे बीच में आकर हमें शत्रुओं के हाथ से बचाए.

व्यवस्थाविवरण 32:30 में, परमेश्वर युद्धों के विषय बात करते हैं। परमेश्वर के इन वायदों पर इस्राएल खड़ा रह सकता है।

व्यवस्थाविवरण 32:30 - [30]यदि उनकी चट्टान ही उनको न बेच देती, और यहोवा उनको औरों के हाथ में न कर देता; तो यह क्योंकर हो सकता कि उनके हज़ार का पीछा एक मनुष्य करता, और उनके दस हज़ार को दो मनुष्य भगा देते?

एक इस्राएली हज़ार पलिश्तियों को कैसे हरा सकता है? दो इस्राएली दस हज़ार पलिश्तियों को कैसे भगा सकते हैं? जब तक कि इस्राएल का परमेश्वर खुद पलिश्तियों के हार की अनुमति न दे। जब तक कि परमेश्वर जो चट्टान है, हमारे ओर से न लड़े तब तक हम कोई भी लड़ाई या युद्ध नहीं जीत सकते। **याद रखे, हम में, अपने आप में कोई भी ताकत नहीं है, हमारे पास अपनी खुद की कोई भी सामर्थ नहीं है।** इस्राएल शक्तिहीन है। इस कारण वे लोग मात्र चिन्ह स्वरुप एबेनेज़ेर- सहायता की चट्टान(Rock of help) के निकट खड़े हैं। परन्तु अब क्या हुआ? चट्टान(Rock) ने पलिश्तियों को हराने के बजाय इस्राएलियों को उनके वश में कर दिया। यह एक बहुत ही ख़तरनाक एवं गंभीर बात है। वो परमेश्वर जो हमारी युद्धों को लड़ता है, जो हमारा जयवंत परमेश्वर है अगर हमें हमारे शत्रुओं के हवाले कर दे, तो यह अत्यंत ही गंभीर एवं बेहद दुखद बात है। तब हमें परमेश्वर की ओर दौड़कर जाना चाहिए और परमेश्वर से पूछना चाहिए -"मैं क्यों हार गया?"

व्यवस्थाविवरण 32:15

[15]परन्तु यशुरून मोटा होकर लात मारने लगा; तू मोटा और हृष्ट-पुष्ट हो गया, और चर्बी से छा गया है; तब उसने अपने सृजनहार ईश्वर को तज दिया, और अपने उद्धारमूल चट्टान को तुच्छ जाना।

तू मोटा हो गया। परमेश्वर शारीरिक रूप से मोटा होने की बात नहीं कर रहे हैं। यहाँ परमेश्वर के चीज़ों के प्रति लापरवाही की बात कही जा रही हैं। अन्य किसी भी धर्म के समान हमें धर्म के बाहरी चिन्ह या साज-सामान की चाहत तो होती है परन्तु हम इस्राएल के परमेश्वर को अपने जीवन में नहीं चाहते। अब हम अपने उद्धार की चट्टान को अनादरपूर्वक देखने लगते हैं। अगर हम इस्राएल के इतिहास का अध्ययन करे तो यह पायेंगे कि यीशु मसीह के आने से लेकर अभी भी मंदिर में चढ़ावा(sacrifices) हमेशा की तरह चढ़ाया जा रहा है। निस्संदेह अब कोई मंदिर नहीं है, पर जब तक कि मंदिरों में पूजा होना बंद हुआ तब तक बलि चढ़ाने का रिवाज़, धार्मिक गतिविधियाँ, धूप का जलाना, लोगो का जमा होना, त्योहारों का मानना, सब कुछ मूसा की व्यवस्था के अनुसार होता रहा। उन में फिर क्या बात की कमी थी? उन में एक बात की कमी थी। उन में **पश्चाताप** नहीं था जिसके कारण उन में कोई सामर्थ नहीं थी। उनकी धार्मिक क्रिया कलापों में पश्चाताप की कमी थी। हम भी इसी प्रकार के फंदे में पड़ सकते हैं। हम परमेश्वर की स्तुति-आराधना कर सकते हैं, प्रार्थना कर सकते हैं, वचन का अध्ययन कर सकते हैं परन्तु परमेश्वर हमसे पूछते हैं, "क्या हमारे जीवन में पश्चाताप है?" इस एक बात की इस्राएलियों में कमी थी। वे पश्चाताप नहीं कर रहे थे, वे परमेश्वर की ओर फिरना नहीं चाहते थे। वे धर्म और परमेश्वर का सिर्फ इस्तमाल कर रहे थे। परमेश्वर कहते हैं, "मैं चट्टान हूँ, और कोई मेरा इस्तमाल नहीं कर सकता। मुझे सिर्फ इस्तमाल करने की कोशिश करोगे तो मैं तुम्हे तुम्हारे शत्रुओं के हाथ बेच दूंगा।" 2 शमुएल 4:3 में सभी अगुए जमा हुए और सही प्रश्न पूछा, "परमेश्वर ने आज हमें हमारे शत्रु पलिश्तियों के वश में क्यों कर दिया?" यह हर एक इसाई के लिए एक सही प्रश्न है। "क्यों मैं अपने आत्मिक जीवन में इतना हारा हुआ हूँ?" पर इस्राएलियों ने गलत निष्कर्ष निकाला। वो गलत निष्कर्ष क्या था? **उन्होंने अपने ह्रदय को नहीं टटोला, अपने जीवनों को नहीं जाँचा, बदले में उन्होंने यह तय किया कि वाचा के संदूक को अपने खेमे में लाएँगे।** क्या हम भी ऐसा नहीं करते हैं? हम कथोलिक समाज के लोगों के धार्मिक चिन्हों को देखकर जैसे क्रूस चिन्ह माला(रोजरी) पवित्र जल का छिडकाव अक्सर हम मज़ाक उड़ाते है। पर हमारा हाल उनसे कौन सा भिन्न है? हम लोग बाइबिल को सोते समय अपने तकिया के नीचे रखते हैं परन्तु वचन को अपने ह्रदय की गन्दगी को साफ़ करने का अवसर नहीं देते हैं। यह गवाही का संदूक (Ark of testimony) क्या है? यह प्रभु यीशु है - परमेश्वर का वचन। हम परमेश्वर के वचन को अपने ह्रदय में छिपे विद्रोह को ठीक करने का अवसर नहीं देते और इसे अपने दुश्मन के खेमे में ले जाते हैं और कहते हैं "यीशु के नाम में"। दुश्मन कहता है "तो क्या?" मैं तुम्हारे ह्रदय को देख सकता हूँ। इस वचन का तुम्हारे ह्रदय में कोई प्रभुता नहीं है, किस हैसियत से इस वचन को तुम मेरे विरुद्ध लाते हो? इस्राएली गवाही के इस सन्दूक को पहले अपने ह्रदय को जाँचने और उससे निपटने नहीं देना चाहते। वे कहते हैं कि वाचा की संदूक को मात्र अपने खेमे में ले जाने से ही उनको जीत हासिल हो जाएगी। परमेश्वर कहते है कि यह मात्र तुम्हारा पूर्वानुमान है। यह इस तरह से काम नहीं करता है। **सिर्फ यीशु मसीह के क्रूस पर पूरा किए गए कार्य को ने देखें, अपने आप से पूछिए कि क्रूस की कथा ने मेरे स्वयं के ह्रदय में क्या कार्य किया है? तब इसमें सामर्थ है।** जहाँ तक प्रभु यीशु मसीह का सवाल है तो उसने क्रूस की मृत्यु सहकर अपने काम को समाप्त किया। पर अपने आप से सवाल कीजिए, "मेरे विषय में क्या? मैं कहाँ हूँ? यीशु मसीह के क्रूस की मृत्यु को किस हद तक मैंने अपने जीवन में लागू किया?" इस्रालिएयों ने ऐसा क्यों किया? उन्होंने अपने कार्य करने का तरीके को गिनती 10:33-36 के उदाहरण से लिया। उन्होंने इतिहास पर निर्भर किया।

गिनती 10:33-36

[33]फिर इस्राएलियों ने यहोवा के पर्वत से प्रस्थान करके तीन दिन कि यात्रा की; और उन तीन दिनों के मार्ग में यहोवा की वाचा का संदूक उनके लिए विश्राम का स्थान ढूंढता हुआ उनके आगे आगे चलता रहा। [34]और जब वे छावनी के स्थान से प्रस्थान करते थे तब दिन भर यहोवा का बादल उनके ऊपर छाया रहता था। [35]और जब जब संदूक का प्रस्थान होता था तब तब मूसा यह कहा करता था, कि हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी

तेरे सामने से भाग जाएँ। [36]और जब जब वह ठहर जाता था तब तब मूसा कहा करता था, कि हे यहोवा, हजारों-हज़ार इस्राएलियों में लौट कर आ जा।

क्या आपने गौर किया? इसी तरह से मूसा इस्राएलियों की अगवाई करता था। यहोवा के वाचा का संदूक आगे जाता था। और जब जब वाचा का संदूक आगे आगे जाता था, चाहे दुश्मन नज़र आए या न आए, मूसा ने क्या कहा? उसने कहा, "हे यहोवा, उठ, और तेरे शत्रु तितर बितर हो जाएँ, और तेरे बैरी तेरे सामने से भाग जाएँ।" इसी का सामानांतर हम नयी वाचा में इफिसियों 6:17 में देखते हैं। युद्ध नीति सिर्फ यहीं इसका ज़िक्र किया गया है।

इफ़िसिओ 6:17 [17]और उद्धार का टोप, और आत्मा कि तलवार जो परमेश्वर का वचन है ले लो,[18]और हर समय और हर प्रकार आत्मा में प्रार्थना और विनती करते रहो...।

मतलब यह कि वचन के साथ प्रार्थना करना है। वचन को हथियार की तरह इस्तमाल करना है, जिस तरह उन्होंने वाचा के संदूक को हथियार की तरह इस्तमाल किया था। यहोवा उठ, और अपने शत्रुओं को तितर बितर कर। परमेश्वर कहते हैं कि वचन को एक हथियार की तरह शत्रु के विरोध में इस्तमाल करना है। परन्तु वचन का इस्तमाल करते समय सावधान रहो, और यह सुनिश्चित कर लो कि तुम्हारा सिर उद्धार की टोप से ढका है। **हमारे मन को संसार नहीं बल्कि वचन नियंत्रण में रखता है।** इस्राएल क्या कर रहा है? वो अपने दुश्मन पलिस्तियों के खेमे में तलवार के साथ अर्थात् वाचा के संदूक के साथ जा रहा है। पर उनके मन और मस्तिष्क में परमेश्वर का वचन नहीं है बल्कि उनका मन पलिश्तियों के जैसा है। पलिश्ती उन्हें यूँ ही पराजित कर देंगे। इसी तरह पराजय का सामना करना पड़ता है। इसलिए परमेश्वर कहते हैं कि यह युद्ध हम शरीर में होकर नहीं लड़ सकते। यह एक आत्मिक युद्ध है। और शत्रु ये जानता है कि किसका हृदय, किसका मन, किसकी सोच, किसकी भावनाएं, किसकी इच्छा परमेश्वर के वचन के द्वारा नियंत्रित है। **क्या हमारा मन/चित परमेश्वर के वचन के द्वारा नियंत्रित है?** हमारा दृढ़ विश्वास हमें किस ओर ले गया है? हमारे प्राण का कुछ भाग हमारा मन होता है। क्या परमेश्वर के वचन के द्वारा हमारा मन नियंत्रित है? क्योंकि हमारी कुछ या अधिकतर भावनाएं नकली या झूठी होती हैं। पर हमें पता नहीं चलता जब तक कि हम इसे परमेश्वर के वचन से जांच न ले। हममे से अधिकतर लोगो के पास नकली दया, सहानुभूति या प्रेम पाया जाता है। पर हमें ये लगता है कि ये सारी भावनाएं असली है। परन्तु परमेश्वर कहते है कि ये वास्तविक नहीं है क्योंकि वे कहते है कि हमारा प्राण उनके वचन के द्वारा नियंत्रित नहीं है। हमें अगर यह जानना है कि हमारा मन प्रभु यीशु के मन से मेल खाता है कि नहीं तो हमें प्रभु यीशु के जीवन का अध्ययन करना होगा। फिलिप्पियों की पत्री में पौलुस कहते हैं कि मसीह यीशु जैसा मन रखो। क्या हमारा सोचना या किसी कार्य को करना यीशु जैसा है? दूसरी बात मेरी भावनाएं किस दिशा में संचालित होती है? अगर हम उड़ाऊ पुत्र के पिता की जगह होते तो क्या करते? जहाँ पुत्र एक **बाग़ी(rebel)** है, या पुत्री एक बाग़ी है या बच्चा एक बाग़ी है, तो हम क्या करते? ऐसे परिस्थिति में घर में रहना और कुछ भी नहीं करना बड़ा मुश्किल हो जाता है। परन्तु परमेश्वर कहते है कि मैं एकदम ऐसा करता हूँ कि मैं खोए हुओं के पीछे जाता हूँ। जो **खो** जाते है मैं उन्हें ढूढ़ने जाता हूँ- जैसे वो स्त्री जो अपने खोए हुए सिक्के को ढूढती है परन्तु जब कोई **बगावत** करता है और चला जाता है, तो मैं उन्हें छोड़ देता हूँ। हम लोग उनके पीछे भागते है लेकिन परमेश्वर कहते है कि वे उनके पीछे नहीं भागते। मैं बाग़ियों के पीछे नहीं भागता। उन्हे सूअर के बाड़े में समय बिताने दो। वे अपने होश में आए चाहे न आए पर हमें बाग़ियों के पीछे नहीं दौड़ना है। परन्तु हम कहते है, "कैसा कठोर हृदय वाला व्यक्ति है।" परन्तु परमेश्वर कहते हैं, "इस व्यक्ति की भावनाएं सही है। वह परमेश्वर के वचन के नियंत्रण में है।" कोई चिट्ठी नहीं, कोई ईमेल नहीं, कोई मनी आर्डर नहीं, कोई sms नहीं, कोई उसके बैंक अकाउंट में पैसे नहीं डाल रहा। एक बाग़ी को सूअर के बाड़े में कोई खाना नहीं देता। आप को उसके बगावत को बढ़ावा नहीं देना है। और परमेश्वर कहते हैं, "जब तुम ऐसा करते हो, पता है क्या? हमारी भावनाएं वास्तविक होती है। कभी कभी हमारी भावनाएं झूठी होती है। हमारा मन और हमारी सोच वचन से मेल नहीं खाते हैं। जब हम परमेश्वर की महिमा करने ऐसे मन, सोच, भावनाओं के

साथ आते हैं जो परमेश्वर के वचन और आत्मा के नियंत्रण में नहीं रहता है तो उस समय हमारी इच्छा शक्ति अपने आप ही शत्रु के नियंत्रण में चली जाती है और तब वो हमें बहुत ही आसानी से बेवकूफ बनाकर और हमें अच्छा महसूस करवाकर वापिस घर भेजता है। पर जब हम गहराई से सोचते है तो पता चलता है कि कुछ भी नहीं बदला क्योंकि शत्रु ने बहुत चतुरतापूर्वक हमारी भावनाओं का संचालित किया है। वो ऐसा करने के लिए संगीत का सहारा लेता है। अगर हमें प्रार्थना के लिए बुलाया जाता है और हम बहुत सामर्थ के साथ प्रार्थना करते है तो हमें यह लगने लगता है कि हम परमेश्वर के साथ सही चल रहे हैं। वही समय है जब हमे जांचने की आवश्यकता है कि क्या मैं प्रभु के अधीनता में हूँ कि नहीं। हम देखेंगे कि प्रभु को समर्पित और असमर्पित जीवन होने का क्या अर्थ है, शत्रु के खेमे में क्या होता है। गिनती 10 में जब मूसा ने कहा, "हे यहोवा उठ और अपने शत्रु को तितर-बितर कर", यह(मूसा) वो व्यक्ति था जिसने सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर को समर्पण किया और इसलिए जब वह बोला तो परमेश्वर उसके पक्ष में खड़े रहे। लेकिन यह हमे कैसे पता चलता है? इब्रानियों 11:26 मे हमें मूसा के बारे में वर्णन है।

इब्रानियों 11:26

[26]और मसीह के कारण निन्दित होने को मिस्र के भण्डार से बड़ा धन समझा: क्योंकि उस की आखें फल पाने की ओर लगीं थीं।

उसने बड़ा धन किसे समझा? मसीह के कारण निन्दित होने को। किस से बढ़कर? मिस्र के भण्डार से बढ़कर। क्या होगा अगर मैं आपसे यह कहूँगा कि हमे परमेश्वर के वचन के ज्ञान को संसार के हर एक ज्ञान से ऊपर रखना चाहिए। यह(वचन) परमेश्वर का धन (खज़ाना) है और संसार में भी धन(खज़ाना) है। परमेश्वर पूछते हैं, "आप कौन सा चुनेंगे? मेरे जन ने परमेश्वर के वचन के ज्ञान को चुना जबकि वो मिस्र का राजकुमार था, और वो कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। वो प्रभु के ज्ञान और समझ में, सीखने में एक सामर्थी पुरुष था।" यही प्ररितों के काम 7:22 कहता है, 'बुद्धि/ज्ञान में सामर्थी'। पर उसने क्या चुना? मिस्र के ज्ञान और धन को नहीं बल्कि मसीह के कारण निन्दित होना चुना, और इस कारण परमेश्वर कहते है, "जब यह व्यक्ति खड़ा होकर कहता है, 'हे परमेश्वर उठ और अपने शत्रुओं को तितर बितर कर' तो मैं निश्चय उठूंगा। मैं उसके पक्ष मे उठूँगा। और जब वाचा का संदूक आगे आगे जाएगा तो मेरी उपस्थिति आगे आगे जाएगी।" मगर इस्राएली प्रभु का उपयोग करना चाह रहे है और इसलिए यह काम नहीं करता है। अगर हम यहोशू 1:5 में देखें तो इस पद को हम अलग तरीके से इस्तमाल करते है। इसलिए सावधान रहें.....

यहोशू 1: 5-8

[5]तेरे जीवन भर कोई तेरे सामने ठहर न सकेगा; जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा; और न तो मैं तुझे धोखा दूंगा, और न तुझ को छोड़ूंगा (यदि कोई आपको यह मेसेज भेजे तो आपको बहुत अच्छा महसूस होता है, 'ओह, मुझे परमेश्वर से प्रतिज्ञा मिली है'.. ऐसे मेसेज भेजने के लिए सावधान हो जाइये। हम ऐसे मेसेज को भेजना पसंद करते हैं जिस से हम अच्छा महसूस करते हैं।)। **[6]इसलिए हियाव बांधकर दृढ हो जा; क्योंकि जिस देश के देने की शपथ मैंने इन लोगों के पूर्वजों से खाई थी उसका अधिकारी तू इन्हें करेगा। [7]इतना हो कि हियाव बांधकर और बहुत दृढ़ होकर जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुझ को दी है** (अब आप यहाँ देखें, यहाँ एक कुंजी है। 'अगर तुम चाहते हो की मैं तुम्हारे संग रहूँ तो तुम्हे इन बातों को करने की आवश्यकता है) **उन सब के अनुसार करने में चौकसी करना; और उन से न तो दाहिने मुड़ना और न बाएं,तब जहाँ जहाँ तू जायेगा वहां वहां तेरा काम सफल होगा। [8]व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिए कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने कि तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।**

पद 5 इसी शर्त पर आधारित है। *'जैसे मैं मूसा के संग रहा वैसे ही तेरे संग भी रहूँगा।'* आप पद 5 को अलग करके अपने लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा को नहीं मान सकते। क्या यह प्रतिज्ञा सत्य है? हाँ सत्य है। क्या यह कार्यशील

है? हाँ कार्यशील है, अगर पद 7 और 8 हमारे जीवन में कार्य करता हो तो। अगर हम उनके दिए गए वचन को 1 प्रतिशत भी तोड़ते है तो परमेश्वर कहते हैं कि हम अपने शत्रुओं से हार जाएँगे। परमेश्वर कहते हैं 'मुझे ऐसा करने के लिए एक विशाल पलिश्ती सेना की भी ज़रुरत नहीं है। एक छोटा सा 'ऐ' नामक नगर तुम्हे हराने के लिए काफी है।' आइये देखे कि इनके इतिहास में क्या हुआ था। जो आज्ञाएँ यहोशू को दी गयी थी उसका पालन सभों को करना था और जब वे जा रहे थे, एक व्यक्ति ने यरीहो से कुछ उठा लिया जो परमेश्वर ने नहीं लेने को कहा था। दूसरे दिन एक छोटा सा क़स्बा उन्हें हरा देता है। और यहोशू परमेश्वर के सन्मुख विलाप करता और प्रार्थना करता है "परमेश्वर हमारे शत्रु।' परमेश्वर कहते है, "उठ मैं तुम्हारा रोना नहीं सुनना चाहता हूँ।' यही तो मैंने कहा। बाहर से जब हम यहोशू को इस हालत में देखते है तो यह सोचते है कि 'वाह, यहोशू कितना अच्छा व्यक्ति है जो परमेश्वर के सामने विलाप कर रहा है।' पर क्या आपको पता है कि परमेश्वर क्या कहते है? वे कहते है कि तुम्हारा शोक करना व्यर्थ और झूठा है। यह मेरे सच्चाई पर आधारित नहीं है। उसे एक अगुआ होने के नाते यह पता होना चाहिए था कि खेमे में पाप घुस आया है। उस पाप से निपट लो तो जीत तुम्हारे पास आएगी। अगली बार वे लोग कब पराजित हुए? गिबोनियों का एक छोटा सा समूह आसानी से इस्राएलियों को भरमा दिया। उन्होंने इस्राएलियों को कैसे भरमाया? यहोशू की पुस्तक का अध्ययन कीजिये। लिखा है कि जब गिबोनी आये और उन्होंने इस्राएलियों को बहुत सारी बातें बतायीं तो उन्होंने परमेश्वर से नहीं पूछा कि वो बातें सच है या नहीं। मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ, इससे फर्क नहीं पड़ता कि किसने आपको वचन सिखाया, या आपने वचन कहाँ से सुना या आप किस कलीसिया में संगति करते है। **जब आप प्रभु के सामने खड़े होंगे तो सिर्फ परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी होंगे।** वो कहेंगे, "मुझे यह मत बता कि उस प्रचारक ने ऐसा कहा और मैंने विश्वास किया।" प्रभु कहेंगे, "उस वचन के विषय में क्या जो मैंने तुम्हे दिया? तुम्हारे पास मेरा वचन था। तुमने उस वचन को नज़रंदाज़ करके प्रभु के दास पर विश्वास करने का चुनाव किया; क्या मैंने यह नहीं कहा था कि तुम्हे हर एक बात को परखना है, और तुमने परखना उचित न समझा। जब कोई तुम्हारे पास आकर कुछ कहता है तो वो बातें तुम्हे अच्छी लगती है क्योंकि वे लुभाने वाली चिकनी चुपड़ी बातें होती है; तुम उसे ग्रहण इसलिए करते हो क्योंकि तुम वचन को और उसके आत्मा को परखना नहीं चाहते हो।" दोनों को परखना आवश्यक है। **सिर्फ वचन को परखना काफी नहीं है, हमें उसके पीछे की आत्मा को भी परखना है; अगर हम उसे अकेले में परखें तो हमें धर्मशास्त्र के अनुसार यह सही लगेगा परन्तु आत्मा भरमानेवाली भी हो सकती है।**

जब बालाम आया और बोला, तो उसने जो कहा सब ठीक और सही कहा। वो श्राप देना चाहता था परन्तु मुँह खोलने पर उसके मुँह से आशीष की बाते निकली। क्या वह जो बोला उसमे कुछ गलत था? नहीं। क्या उसके बोलने के पीछे जो आत्मा थी वो सही आत्मा थी? नहीं। उस आत्मा का न्याय हुआ। इसके बावजूद वो कहता है, 'काश कि मैं धर्मियों की नाई मरता,' क्या परमेश्वर ने उसके सुनी? नहीं, उन्होंने कहा, 'जब इस्राएल प्रवेश करेगा, तो तू सबसे पहले मारा जायेगा क्योंकि तुम्हारे बोलने के पीछे जो आत्मा थी वो झूठी थी.' यह काफी नहीं कि हम सिर्फ वचन को परखे। हमे उस वचन के पीछे जो आत्मा कार्य कर रही है उसे भी जाँचना है। इसलिए परमेश्वर कहते हैं, 'आत्मा को परखो', 'वचन को परखो'। और हम मे से हर एक जन इसके लिए उत्तरदायी होगा। हम यह नहीं कह सकते, हमने यह सुना, हमने वो सुना। इस प्रचारक ने ऐसे कहा, उस प्रचारक ने वैसे कहा। नहीं!, लेकिन ऐसा कलीसियाओ में होता आ रहा है। वे संस्थापक की कही हुई बातों को परमेश्वर के वचन से ऊँचा स्थान देते है। अगर ग्रेस टैबेरनैकल चर्च कभी ऐसा करे, पता है क्या, जिस क्षण जेम्स की मृत्यु होगी, ग्रेस टैबेरनैकल कभी भी जेम्स से आगे नहीं बढ़ पाएगा। और इस क्षण जबकि मैं ग्रेस टैबेरनैकल के संस्थापक के रूप में जीवित हूँ, यदि मैं परमेश्वर के संग आगे नहीं बढ़ता रहता हूँ, तो बाकी कलीसियाएं भी वहीँ की वहीँ खड़ी रह जाएंगी। मुझे आगे बढ़ते रहना है। जितने दिन तक चेले जीवित थे और प्रकाशन आते रहता था, वे परमेश्वर के संग आगे बढ़ते रहे परन्तु कलिसियाएँ परमेश्वर के वचन पर आधारित थी। जब संस्थापक की मृत्यु हुई, तो परमेश्वर के वचन के बजाय संस्थापक के सिद्धान्तों या शिक्षण उन कलीसियाओं की

बुनियाद बन गयीं। इसलिए यदि आप उन में से किसी भी कलीसियाओं को देखें, वे अपने संस्थापक के आगे नहीं बढ़ पाए। सो यही आप उनसे पूछें, वे कहेंगे, 'हमारे संसथापक के रूप में वेस्ली, लूथर हैं, और वे अपने संस्थापक के आगे कभी बढ़ नहीं पाए। क्या परमेश्वर ने वेस्ली को सम्पूर्ण प्रकाशन दिया था? नहीं, नहीं दिया। क्या लूथर को दिया था? नहीं, नहीं दिया। कोई भी संस्था/चर्च अगर परमेश्वर के वचन पर आधारित नहीं है तो वो संस्थापक के नियमों को और उसकी कही हुई बातों पर ध्यान लगायेंगे और परमेश्वर के वचनों को दर-किनार कर देंगे। और वो संस्था सिर्फ उतनी दूर जाएगी जितनी दूर उनके संस्थापक जा पाए। इसलिए परमेश्वर कहते हैं, 'यह यहाँ (परमेश्वर का वचन) है। तुम्हे अपने संस्थापक के आगे बढ़ते रहना है। हम वचन को नहीं परखते हैं। हम आत्मा को नहीं परखते है और परमेश्वर कहते हैं, "तुम पराजित होगे। क्योंकि परमेश्वर का वचन का हर बात में, हर परिस्थिति के ऊपर अंतिम अधिकार (final authority) है।

1 शमूएल अध्याय 4, यहाँ एक सम्पूर्ण राष्ट्र एक काल्पनिक अवस्था या अनुमान में है। क्योंकि उन्होंने सोचा कि उनके पास वाचा का संदूक है तो वे युद्ध जीत जायेंगे। परन्तु वे यह नहीं समझ पाए कि वाचा का संदूक तो उनके पास है परन्तु परमेश्वर की उपस्थिति उनके पास नहीं है। आप वचन बोल सकते है परन्तु क्या उसके पीछे परमेश्वर की उपस्थिति है? यह एक प्रश्न है; हम और आप वचन बोल सकते हैं। शत्रु शैतान भी परमेश्वर के वचन को भली भांति जानता है। परन्तु शत्रु वचन के पीछे जो आत्मा है उसे भी जानता है। इसलिए जब स्किवा के पुत्रों को शत्रु कहता है 'मैं यीशु को जानता हूँ, पौलुस को भी मैं जानता हूँ, पर तुम कौन हो? मैं तुम्हे नहीं जानता। मैं तुम्हारे अन्दर परमेश्वर का वचन नहीं पाता। मुझे तो तुम्हारे अन्दर सिर्फ विरोध दिखाई देती है। जब मैं तुम्हारे ह्रदय को देखता हूँ तो उसमे मैं अपने आपको पाता हूँ। हम लोग दोनों विद्रोही हैं; हम दोनों में कोई विभिन्नता नहीं है। तो किस अधिकार से तुम मेरे पास आकर कहते हो 'यीशु के नाम से।' मैं भी तुम्हे कह सकता हूँ, 'यीशु के नाम से।' यही तो इस्राएलियों के साथ हुआ। अगर आप देखें, संसार में सम्पूर्ण कलिसियाएँ 'विश्वास के वचन' के आंदोलन के भ्रम ने जकड़ रखा है; यदि आप इसे बाहर से देखें, जो वे प्रचार करते हैं उसमें कुछ भी गलत नहीं है। परमेश्वर के वचन में सामर्थ है, बल है और मनुष्य परमेश्वर के वचन से जीवित रह सकता है। जीभ में जीवन और मृत्यु की सामर्थ है और आपको परमेश्वर के वचन को बोलना चाहिए। परन्तु **परमेश्वर हमारे मुँह से निकले हुए वचन से पहले हमारे ह्रदय को देखते हैं।** शत्रु भी हमारे ह्रद्य को भली-भांति जानता है। वह जानता है कि यह ह्रद्य परमेश्वर के वचन के अधीनता में है कि नहीं, फिर वह वचन को सुनता है। और तौभी अगर हमारे द्वारा कहा गया परमेश्वर का वचन सही है मगर हमारा ह्रदय परमेश्वर के वचन के प्रति सही नहीं है तो हमारा शत्रु हमें आसानी से बेवक़ूफ़ बनाकर अपने नियंत्रण में रख सकता है; क्योंकि परमेश्वर ने खुद कहा है कि अगर कोई भी मनुष्य या नबी अपने ह्रद्य में बसी मूर्ति के साथ मेरे पास आता है तो मैं उसके ह्रद्य में बसी मूर्ति के अनुसार ही उत्तर देता हूँ। इसलिए पवित्रशास्त्र कहता है कि लोभ मूर्तिपूजा के समान है। तीमुथियुस की पुस्तक में लिखा है, संतोष सहित भक्ति एक अद्भुत बात है। अगर तुम्हारे पास तन पर कपड़े हो और मेज़ पर खाना हो तो तुम्हे इसी से संतोष होना चाहिए। और तब हम यह प्रचार चारों ओर से सुनते हैं -'धन की आशीष, आशीष, आशीष, तब हमे पता होना चाहिए कि हमारे भीतर की गहराई में लोभ है। अगर हम बाइबिल के सारे वचनों का हवाला (quoting) देना शुरू करे तो परमेश्वर कहते हैं कि तुम्हारे मन के अन्दर जो मूरत है मैं उसी के अनुसार से तुम्हे तुम्हारा जवाब दूँगा। तुम्हे लगेगा कि मैं तुम्हे आशीष दे रहा हूँ; परन्तु तुम्हे कोई अंदाजा नहीं कि वास्तव में मैं तुम्हारा न्याय कर रहा हूँ। परमेश्वर कहते हैं कि मैं तुम्हारे ह्रदय को टटोल रहा हूँ। **कृपया यीशु के अदभुत कार्यो को वचन से अलग करके न देखे।** कितने लोगों ने परमेश्वर के सामर्थ को अदभुत कार्यो के द्वारा अनुभव किया, कितनो ने चंगाई प्राप्त किया। परन्तु कितने पूर्ण किये गए? कितनी बार हम बाइबिल में पढ़ ले और यीशु को खोजे जहाँ उन्होंने कहा, 'जाओ तुम पूर्ण किये गए हो।' दस कोढ़ी जो चंगे किए गए थे, उनमे से सिर्फ एक

पूर्ण किया गया था। कितने लोगों ने जंगल में परमेश्वर की सामर्थ को अनुभव किया? परमेश्वर उनके बारे में क्या कहते हैं। भजन सहिंता 103 पद 7.

भजन सहिंता 103:7 उस ने मूसा को अपनी गति, और इस्राएलियों पर अपने काम प्रगट किये।

हर जगह परमेश्वर के किये गए काम का ज़िक्र हो रहा है। क्या किसी ने भी परमेश्वर की विधियों या तरीकों को जानने की कोशिश की। कोई भी परमेश्वर के तरीकों को नहीं जानता था सिवाय एक (मूसा) के और दो अन्य (यहोशू और कालेब) जो उस एक के पीछे चलते थे, परमेश्वर के तरीके जानते थे। छः लाख पुरुष, स्त्री और बच्चो के मध्य में सिर्फ तीन लोगों को परमेश्वर के नियम जान पाए थे। पहला व्यक्ति, क्योंकि उसने तरीका परमेश्वर से पाया, अन्य दो लोग क्योंकि उन्होंने उस व्यक्ति का अनुसरण किया जिसने परमेश्वर के तरीकों को खोजा। कोई और परमेश्वर के तरीकों को पाया। आज जो हम गवाहियाँ सुनते है वो परमेश्वर के अदभुत चिन्ह और काम के बारे में होता है और यह कि परमेश्वर के अद्भुत कार्य ठोस सबूत हैं कि आपने परमेश्वर के नियमों को पाया है। मगर यह सोचना बिलकुल गलत है। अगर हम इस्राएल के इतिहास को देखें; वे सभी जंगल में नाश हो गए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के तरीके को नही जाना। उन लोग को बिलकुल भी परमेश्वर के तरीके में कोई दिलचस्पी नहीं थीं। उन्हें सिर्फ परमेश्वर की सामर्थ और चिन्ह-चमत्कार चाहिए था। परमेश्वर पूछ रहे हैं, क्या आप देख रहें हैं यहाँ क्या हो रहा है? वे लोग सामर्थ के पीछे हैं; वे वाचा का संदूक ला रहे हैं और कह रहे हैं, "उठ हे परमेश्वर, आपके शत्रु तितर-बितर होने पाए।" वे चाहते हैं कि मैं उनके बदले में काम करूँ जबकि उन्होंने मेरी आज्ञाओं का एक साथ उल्लंघन किया है। यह निर्जन स्थान में नहीं हुआ है, मैं उन्हें मिस्र से निकाल कर निर्जन स्थान में ले गया। मैंने प्रतिज्ञा के देश में उन्हें यहोशू के प्रतिनिधित्व में जीत दिलाई। मैंने अपने नियमों और व्यवस्था को स्थापित किया और कहा कि अगर तुम इसके अनुसार जीवन बिताओगे तो विरोधी तुम पर कभी भी जयवंत नहीं हो पाएगा। मगर तुम ने सारे नियमों को तोड़ा। और अब तुम्हारे पास उस याजक की प्रधानता है जिसके पुत्र, शैतान के पुत्र हैं। और वे पुत्र ही तुम्हारा नेतृत्व कर रहे है और तुम कह रहे हो, "परमेश्वर उठ हमारे शत्रुओं को तितर बितर कर।" विरोधी आत्मिक स्तर पर जांच रहा है और कहता है, "क्या वे दोनों व्यक्ति हमारे आदमी नहीं है? पिन्हास और होप्नी, क्या वे हमारे जैसे नहीं हैं? क्या परमेश्वर ने आप ही नहीं कहा कि ये दोनों शैतान के पुत्र हैं? और अब परमेश्वर से कहते हैं कि हमारे शत्रुओं को तितर बितर कर। परमेश्वर कहते हैं कि यह तुम्हारा पूर्वानुमान है। मैं तुम्हारे पक्ष में न खड़ा हूँगा और न ही रक्षा करूँगा। यह नहीं होगा। इसलिए जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़े तो बड़े ध्यान से पढ़े और पूरी घटना को पढ़े। बाइबिल में अनेक वायदे/प्रतिज्ञाएँ है और हर प्रतिज्ञा यीशु मसीह में हाँ और अमीन के साथ पूरा होता है। क्या आप इस पर विश्वास करते हैं? इस बात पर ध्यान दीजिए, पहली हार के बाद इस्राएली वापस गए और उन्होंने पुरनियों (बड़ों) को बुलाया। वे एक साथ बैठकर पूछने लगे कि हमारी हार क्यों हुई? हे परमेश्वर इस्राएल क्यों परास्त हुए? यह एक सही प्रश्न था, पर उन्होंने जो निष्कर्ष निकाला कि हमारे पास वाचा का संदूक नहीं था, वो गलत था। ऐसा नहीं है, वास्तव में वे लोग अपने हृदय के पापों से नहीं निपटे। क्या बाइबिल में दिए गए प्रतिज्ञाओं में कोई गलती है? नहीं, हर एक प्रतिज्ञा हाँ और अमीन के साथ पूरा होता है। तो क्या हम जब प्रतिज्ञाओं का इस्तेमाल करते हैं, वो गलत है? नहीं, यह गलत नहीं है, परन्तु हम कहाँ पर गलती कर रहे हैं? हम प्रतिज्ञाओं के उद्देश्य को भूल गए हैं। इसलिए तुम गलत दिशा में जा रहे हो; 2 पतरस 1:4 में पतरस ने प्रतिज्ञा के उद्देश्य को अच्छी तरह से समझाया है। हालांकि पतरस ने दो छोटी पत्रियाँ लिखीं हैं फिर भी ये बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये स्वर्ग की कुंजियाँ है। यहाँ तक कि पौलुस, यूहन्ना और यहूदा की पत्रियों की भी कुंजियाँ पतरस के पास मिलती है।

2 पतरस 1:4 - [4]जिन के द्वारा उस ने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएँ दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वाभाव के सहभागी हो जाओ।

हमे क्या सिखाया जा रहा है? क्या परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को लेकर इस संसार की अभिलाषाओं मे खो जाना? परमेश्वर कहते हैं कि प्रतिज्ञाएँ तो सही हैं, पर इसके पीछे की आत्मा सही नहीं है। इन प्रतिज्ञाओं का संसार से कुछ भी लेना देना नहीं है। इन प्रतिज्ञाओं को संसार की अभिलाषाओं पर जीत हासिल करने के लिए परमेश्वर ने हमें दिया है। संसार अभिलाषाओं के द्वारा संचालित होती है परन्तु परमेश्वर का राज्य प्रेम के द्वारा संचालित होता है। और प्रेम का स्वभाव देना है, न कि लेना है। प्रेम हमेशा देता ही रहता है। परमेश्वर हमेशा देते है। कामुकता(lust) का काम सिर्फ लेना है, वो देना नहीं जानता। इस अंतिम समय में जो हम सुसमाचार सुन रहें है, वो सिर्फ हासिल करने के बारे मैं है। देने के बारे नहीं और यदि है भी तो वह भी बैंक में निवेश करने के जैसा है, थोड़ा डालो और ज्यादा पाओ। यहीं हम फंस जाते हैं। इस्राएल वाचा का संदूक उठाए यह उम्मीद लगा रहा है कि परमेश्वर उनकी तरफ से लड़ेंगे। परमेश्वर कहते हैं कि इस्राएल तो एक राज्य के रूप में अपना प्राथमिक लक्ष्य भूल गया है। परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को संसार की अभिलाषाओं को प्राप्त करने के लिए नहीं बल्कि इस संसार की अभिलाषाओं से लड़ने के लिए इस्तमाल करना है। शुरुआत में ही परमेश्वर इस्राएल के अस्तित्व के बारे में साफ़ तौर में बताए थे-

निर्गमन 19:4-6

[4]कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या क्या काम किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़कर अपने पास ले आया हूँ। [5]इसलिए यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा को पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। [6]और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे।

परमेश्वर कहते हैं कि वाचा का संदूक इसका गवाह है; तुम पवित्र जाति और याजको का समाज हो। हमें ये कैसे पता चलता है, क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति का चिन्ह यानी वाचा का संदूक उनके बीच में है। पर अब तुम एक पवित्र राज्य नहीं हो। तुम एक अपवित्र राज्य बन गए ,तुम्हारे पास याजक तो है पर सब दिखावे के हैं। तुम मेरी सेवा नहीं कर रहे हो वरन बेलिआल की सेवा कर रहे हो और वाचा के संदूक को लाकर तुम यह समझते हो कि मैं तुम्हे विजय दिलाऊं। कभी नहीं, वाचा का संदूक जो तुम्हारे पास है उसका पहला चिन्ह पवित्रता है। हम लोग कलीसिया के अस्तित्व का प्राथमिक उद्देश्य भूल गए हैं। **कलीसिया का काम जीवित परमेश्वर की महिमा करना है और यह घोषणा करना है कि हमारा परमेश्वर पवित्र है और हमे उनका प्रतिनिधि एक पवित्र प्रजा बनकर करना है।** हमे संसार के गलत कामों में साझीदार नहीं होना हैं और न ही इस दुनिया में दस बंगले या चार गाड़ी होने से बड़ा बनना है। यह चीजें तो हमें हमारा दुश्मन शैतान भी दे सकता हैं। धन प्राप्ति के लिए हमें जीवित परमेश्वर की आवश्यकता नहीं है। चंगाई के लिए भी उसकी जरूरत नहीं है क्योंकि चिकित्सा-शास्त्र (medical science) के द्वारा हमें अनेक तरह की चंगाई मिल जाती है। हमारा शत्रु शैतान जो हमें नहीं दे सकता वो है **पवित्रता, जो परमेश्वर का चरित्र** है। हमारा शत्रु कभी भी हमें सच्चा प्रेम नहीं दे सकता। वह हमें कामुकता/लालसाएँ देता है। वो हमें प्रेम इसलिए नहीं दे सकता क्योंकि वह प्रेम के बारे में जानता ही नहीं। परमेश्वर हमसे अपनी अदभुत अद्वैत स्वभाव का भागीदार बनने के लिए कहते हैं। यही उद्देश्य है, परमेश्वर कहते हैं। और यदि आप इस उद्देश्य को समझ जाते हैं, तब पवित्रता आपके ह्रदय में राज्य करेगा और जब आप अपने शत्रु के सामने खड़े होकर कहेंगे, "हे परमेश्वर उठ और मेरे शत्रु को तितर बितर कर" तब वे निश्चय तितर बितर हो जायेंगे क्योंकि परमेश्वर खुद आपका प्रतिनिधित्व करेंगे। तो कहानी से हमें यह सबक मिलता है कि **हम मूसा और यहोशू की नक़ल या अनुकरण नहीं कर सकते जब तक हम उनके समान परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता का अनुकरण न करें**। शत्रु कहेगा "मूसा को मैं जानता हूँ, यहोशू को मैं जानता हूँ, तुम मुझे यह बताओ कि तुम कौन हो?" पिन्हास और होप्नी मरने वाले हैं और उनके साथ अन्य दस हज़ार भी मरने वाले हैं क्योकि वाचा के संदूक को उठाने वाले लोग अलग हैं। इतने सालों में कुछ नहीं बदला है। परमेश्वर का वचन आज भी वही है। पर जो लोग परमेश्वर के वचन को बाँट रहे हैं वे ही बदल गए हैं। इसलिए शत्रु कहता है, "मैं तुम्हारी परवाह नहीं करता, न ही तुम्हारी चिन्ता करता हूँ। सच यो यह है कि तुम मेरे कार्य में मेरी सहायता कर रहे हो।"

नियम 1:- परमेश्वर को यह कतई पसंद नहीं कि उनका इस्तेमाल खुशकिस्मत के प्रतीक यानि good luck charm की तरह किया जाए। वह हमारा खुशकिस्मत का प्रतीक बनने से इनकार कर देगा। वो ही पवित्रशास्त्र (बाइबिल) जो अलमारी पर रखा हुआ हमारा एक दिन न्याय करेगा जिस पर धूल जम रहा है। पवित्रशास्त्र को अलमारी पर इसलिए सजा कर नहीं रखना है कि वो हमें बुरी नज़र से बचाएगा। शत्रु तब भागेगा जब परमेश्वर का वचन हमारे ह्रदय में वास करेगा। इसका मतलब यह नहीं कि हम परमेश्वर के वचन को मात्र रट ले परन्तु **जब हम परमेश्वर के वचन के अनुसार चलेंगे तब शत्रु दूर भागेगा।** जब कलिसियाएँ परमेश्वर के वचन का अनुसरण उस वचन के अधीनता के बिना करती है, तो शुरुआत मे शत्रु थोड़ा घबरा जाता है पर बाद में वो पहले से ज्यादा हमसे लड़ता है। 1 शमूएल 4 बहुत ही रोचक है।

1 शमूएल 4:4-10

4तब उन लोगों ने शीलों में भेजकर वहां से करुबों के ऊपर विराजनेवाले सेनाओं के यहोवा की वाचा का संदूक माँगा लिया; और परमेश्वर की वाचा के संदूक के साथ एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पिन्हास भी वहां थे। 5जब यहोवा की वाचा का संदूक छावनी में पंहुचा, तब सारे इस्राएली इतने बल से ललकार उठे, की भूमि गूँज उठी। 6इस ललकार का शब्द सुनकर पलश्तियों ने पूछा, इब्रियों की छावनी में ऐसी बड़ी ललकार का क्या कारण है? तब उन्हों ने जान लिया, कि यहोवा का संदूक छावनी में आया है। 7तब पलिश्ती डरकर कहने लगे, उस छावनी में परमेश्वर आ गया है। फिर उन्हों ने कहा, हाय! हम पर ऐसी बात पहले नहीं हुई थी। 8हाय! ऐसे महाप्रतापी देवताओं के हाथ से हम को कौन बचाएगा? ये यो वे ही देवता हैं जिन्हों ने मिस्रियों पर जंगल में सब प्रकार की विपत्तियाँ डाली थीं। 9हे पलिश्तियों, तुम हियाव बांधो, और पुरुषार्थ जगाओ, कहीं ऐसा न हो कि जैसे इब्री तुम्हारे अधीन हो गए वैसे तुम भी उनके अधीन हो जाओ; पुरुषार्थ करके संग्राम करो। 10तब पलिश्तीं लड़ाई के मैदान में टूट पड़े, और इस्राएली हारकर अपने अपने डेरे को भागने लगे; और ऐसा अत्यंत संहार हुआ, कि तीस हज़ार इस्राएली पैदल खेत आए।

क्या वाचा का संदूक वहाँ था? क्या जब वाचा का संदूक वहाँ आया तो वे ललकारे? क्या जब वे ललकारे तो धरती कांप उठी? क्या शत्रु भाग खड़े हुए? नहीं, शत्रु ने तो पहले से भी बेहतर लड़ाई की। हम परमेश्वर के बिना उनकी चीजों की नक़ल नहीं कर सकते। उस में कोई भी सामर्थ नहीं होती है। उपवास और प्रार्थना करना अच्छी बात है। यदि आपका जीवन परमेश्वर के वचन के नियंत्रण में नही है तो उपवास और प्रार्थना कोई भी दुष्टात्मा को नहीं भगा सकता है। इसलिए हर कलीसिया उपवास और प्रार्थना का अनुसरण करती है। यह उनके समय सारणी में होता है। वे आराधना करना और चिल्लाना शुरू करते है। शुरुआत में दुष्टात्माएं थोड़ा डर जातीं हैं। अरे! इन लोगों ने भी प्रार्थना और उपवास शुरू कर दिया? तब वे उनके ह्रदयों में झांकते हैं, और पाते हैं कि परमेश्वर के वचन से उनके मन का कोई सम्बन्ध है ही नहीं, और वे उन्हे बढ़ा कर मारती हैं। इसी कारण से बहुत सारे लोगों की परिस्थिति उपवास और प्रार्थना में शामिल होने के बाद और बदतर हो जाती है। पहले सिर्फ चार हज़ार मारे गए थे पर उपवास और प्रार्थना के बाद तीस हज़ार मारे गए। अपने जीवन को जीवित परमेश्वर को समर्पण किए बिना पहले ही परमेश्वर की चीज़ों की नकल कदापि करने की कोशिश न करें। सच तो यह है कि जब आपका ह्रदय परमेश्वर के वचन के अधीन है तब ही परमेश्वर की सामर्थ कार्य करेगी। उपवास और प्रार्थना में सामर्थ नहीं होती है बल्कि **संसार से अपने आप को अलग करके और परमेश्वर के अधीन होकर उपवास और प्रार्थना करने में सामर्थ है।** यही पर तो आत्मसमर्पण होता है। तब दुष्टात्माएं थरथराती हैं।

ओह! यह पुरुष, यह स्त्री, यह बालक गम्भीर है और परमेश्वर का अधिकार इनके जीवन में स्थापित हुआ है। मैं कभी कभी यह सोचता हूँ कि उन्हें शमूएल को वाचा के संदूक के आगे आगे चलने को कहना चाहिए था। ऐसा करने से पलिश्ती घबरा जाते। यह क्या? एक छोटा बच्चा? और यह काफी होता। परमेश्वर सिर्फ उस छोटे बालक शमूएल के खातिर उठ जाता। परमेश्वर को सिर्फ इतना ही चाहिए था। अगर शमूएल वहाँ खड़ा होता और कहता, “हे परमेश्वर उठ! अपने शत्रुओं को तितर बितर कर।” तो परमेश्वर कहता, “ठीक है, मैं तुम्हारे खातिर सुनूँगा। तू मेरा पुत्र है। तुम्हारे

खातिर मैं सुनूँगा।" पवित्रशास्त्र बताती है कि शमूएल का वचन सारे इस्राएल के पास पहुंचा, परन्तु इस्राएल एली, होप्नी और पिन्हास के पास सलाह लेने गए। जो संसार हमारे अन्दर बसा हुआ है वो सलाह लेने के लिए उन याजकों(priesthood) के पास जायेंगे जो संसार के समान हैं। कोई भी परमेश्वर के पास नही गया; हमारा शत्रु पवित्रशास्त्र बहुत अच्छी तरह से जानता है। उसे पता है कि एक संत जो परमेश्वर के प्रति समर्पित है वो दुश्मन के खेमे में हलचल मचा सकता है। दुश्मन ढोंगियों(pretenders) को भी पहचानता है। ढोंगियों के पास बिना सामर्थ के ज्ञान है। उनके पास ज्ञान है और अच्छा ज्ञान है। यीशु ने जो किया वो उन्हें सब पता है। परन्तु उस ज्ञान ने कभी भी उनके ह्रदय को और न ही उनके जीवनों को छुआ। वे अभी भी विद्रोह(rebellion) में चल रहे हैं। और क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में विद्रोह से नहीं निपटे, शत्रु और भी सामर्थ के साथ उन पर हमला करता है।

कलीसिया, यह याद रखें, कि परमेश्वर का वचन कोई जादुई छड़ी नहीं है। मुझे यह बताने दीजिये कि आपको परमेश्वर के वचन का इस्तमाल करने के लिए योग्य बनना होगा। शत्रु को पता होता है कि आप इसके योग्य हैं कि नहीं। उसे आपके जीवन और परमेश्वर के वचन के बीच में हुए संघर्ष के बारे में भी पता है। वो आपको आपके पति या पत्नी, आपके माता या पिता, आपके भाई या बहन से भी अच्छी तरह से जानता है। शत्रु को पता है कि आप अपने व्यक्तिगत संघर्ष में हारे है या जीते हैं। आप जब जीतते हैं तो वह आतंकित हो जाता है। क्योंकि वो जानता है कि जब आप आम जनता के सामने आकर कहेंगे, "हे परमेश्वर उठ! मेरे शत्रुओं को तितर बितर कर" तब परमेश्वर आपके पक्ष में होगा। और वो यह भी जानता है कि यदि आपका जीवन परमेश्वर के वश में नहीं है तो परमेश्वर आपके पक्ष में नहीं होगा और आप उसके वचन को तलवार की तरह इस्तमाल नहीं कर पाएंगे।

इस कारण हमें सर्वप्रथम परमेश्वर के साथ अकेले में समय बिताना है, और परमेश्वर से कहना है, "प्रभु आपका वचन, आपकी वाचा का संदूक, पहले मेरे ह्रदय में आए इससे पहले कि मैं उसे अपने काँधे पर उठाऊँ। पहले उसे मेरे ह्रदय में आने दें।" इसी वजह से, परमेश्वर दाऊद से अत्यंत प्रेम करता था। दाऊद ने कहा, "मैं परमेश्वर के वाचा का संदूक अपने राज्य में लाउँगा। मैं उसे करीब, और करीब, और करीब लाना चाहता हूँ।" और परमेश्वर ने कहा, "यह मेरे ह्रदय के मुताबिक व्यक्ति है।" इस्राएल परमेश्वर की आराधना स्तुति या महिमा या परमेश्वर के वचन के द्वारा मार्गदर्शन के लिए वाचा का सन्दूक नहीं लाना चाहता था बल्कि वे तो सन्दूक अपनी इस बुरी परिस्थिति से निकलने के लिए लाना चाहते थे। क्या ये जानी-पहचानी सी बात नहीं लगती? आपको परमेश्वर का वचन क्यों चाहिए? अपने परेशानी की दशा से निकलने के लिए? नहीं बल्कि आपको **सही मार्ग दिखाने के लिए परमेश्वर का वचन है**। अपनी परेशानी से छुटकारा प्राप्त करने के बाद आप अपनी मर्ज़ी के अनुसार रहना चाहते है, जब तक कि दूसरी परेशानी से फिर न घिर जाएँ (जो जल्द ही आ जायेगा)। इस कारण हर कलीसिया के लोग पादरी के पास दौड़ते हैं और कहते हैं, "क्या आपके पास मेरे लिए वचन है? मैं बहुत परेशानी में हूँ। क्या आपके पास मेरे लिए वचन है, जिसके द्वारा मैं अपने परेशानी से बाहर निकल सकूँ?" वे यह नहीं कहते, "प्रभु मुझे अपना मार्ग दिखा। आपका वचन मेरे मार्ग के लिए उजियाला है। मगर नहीं, वे नहीं जानना चाहते हैं। इस्राएल सन्दूक का इस्तमाल केवल अपनी बुरी परिस्थिति से निकलने के लिए करना चाहता है। परमेश्वर उन्हें सबक सिखाने के लिए अब उनके शत्रुओं का इस्तमाल उनके विरुद्ध में करेगा। कैसा सबक? **मेरा इस्तमाल मत करो।** कोई भी परमेश्वर का यूँ ही इस्तेमाल नहीं कर सकता। परमेश्वर के वाचा का सन्दूक खेमे में होने के बावजूद परमेश्वर स्वयं उनके विरोध में था। यह कलीसिया के लिए सबसे खतरनाक बात है। हम जिस परमेश्वर के नाम से खड़े होते हैं और वही परमेश्वर हमारे खिलाफ हो जाए। हमे संसार, दुष्टात्माएं, या किसी भी चीज़ के विषय में चिंता करने की जरूरत नहीं है। परन्तु तब क्या जब परमेश्वर हमारे ही विरुद्ध हो? हमे यह वाक्य इस्तेमाल करना पसंद है - *'अगर परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन हो सकता?* अगर हम इस पद को उल्टा कर दें तो यह होगा, अगर परमेश्वर ही तुम्हारे विरोध में हो, तो सभी लोग तुम्हारे साथ हों भी तो इससे क्या फर्क पड़ेगा? यही बात इस्राएल सीख रहा है। परमेश्वर उनके विरुद्ध में है। यदि तुम मेरे वाचा के संदूक को अपने

मध्य में ले भी आये तौभी मैं तेरे विरुद्ध हूँ। मैं तुम्हे पराजय दूंगा क्योंकि मैं तेरे विरुद्ध हूँ, तुम्हारी चट्टान ने तुम्हे अकेला छोड़ दिया, क्योंकि तुम धर्म के रीति-रिवाजों में फंसे हुए हो और इसे अपने हृदय को छूने नहीं देना चाहते हो। सिफ मेरा उपयोग करना चाहते हो। परमेश्वर का वचन मेरे हाथ में है, पर मैं इसके द्वारा जय प्राप्त नहीं कर पा रहा हूँ, इसके विपरीत यह मुझे हमेशा जाँच रहा है।

1 शमूएल 4:11

[11]और परमेश्वर का संदूक छीन लिया गया; और एली के दोनों पुत्र, होप्नी और पीनहास, भी मारे गए।

ये घातक हो सकता है, है ना? परमेश्वर का संदूक कब्ज़े में है और पुरोहित दल की मृत्यु हो गयी है। और अब सन्दूक पलिश्तियों के पास है। क्या यह सत्य है? संदूक कहाँ है? परमेश्वर के वाचा का संदूक किनके हाथों में है? अगर आप देखें, कलीसियाओं के मंच(pulpit) पर पलिश्तियों ने कब्ज़ा कर लिया है। समलैंगिक(homosexual) पुरोहित मंच पर खड़े होकर कहते हैं कि परमेश्वर इसे समझते है(God understands)। लोभी लोग विधवाओं और अनाथों का पैसा लूट रहें हैं। किसने सन्दूक को ले लिया है? पलिश्तियों ने संदूक ले लिया है और पुरोहितवर्ग की मृत्यु हो चुकी है। परमेश्वर के वाचा का संदूक ले लिया गया है, परन्तु परमेश्वर मरा नहीं है। पीछे में एक छोटा बालक है जो बढ़ रहा है। ठीक यही परिस्थिति पूरे संसार में है। यहाँ तक कि दूसरे धर्म के लोग भी, हिन्दू भी लज्जित महसूस करतें हैं। ओह, अमरीका में तो पुरोहित समलैंगिक हो सकते हैं। और वो इसे ठीक समझते हैं। मुसलमान यह सोचते हैं कि यदि ये हम मे से होते तो उनका सिर काट डालते। और यह हमारा प्रभु है जो इन बातों के खिलाफ पवित्रशास्त्र में वर्णन किया है। किसी और परमेश्वर ने इन बातों के खिलाफ कुछ नहीं कहा। यह हमारा प्रभु जो जीवित प्रभु है उसने कहा कि ये बातें घिनौनी हैं। और अब ये घिनौनी बाते मंच के पीछे हैं। किसी भी अन्य धर्म के किस देवता ने लोगों से यह कहा कि पैसे के पीछे मत भागो? सिर्फ हमारे परमेश्वर ने। किसी और ने ऐसी बात नहीं कही। हमारे परमेश्वर ने कहा, तुम धन(mammon) की सेवा नहीं करोगे। लेकिन मंच पर सिर्फ धन की चर्चा होती है। पलिश्तियों ने संदूक ले लिया है और उधर शमूएल बढ़ रहा है। परमेश्वर की आवाज़ को कभी भी शांत नहीं किया जा सकता है। वो वहाँ हमेशा रहेगा। परमेश्वर की आवाज़ समस्त भूमंडल तक पहुँचेगी। मनुष्य इस आवाज़ को चाहे सुन भी सकते हैं या चाहे नहीं। एक समय ऐसा आएगा जब इस्राएली शमूएल के पास आयेंगे। होप्नी और पीनहास मर चुके हैं। पूरी घटना में सिर्फ एक व्यक्ति है जिसे यह समझ में आया कि ऐसा क्यों हो रहा है। और वो थी, एली की बहू। उसे समझ में आ गया कि परमेश्वर की महिमा इस्राएल से उठ चुकी है। क्या हम जानते हैं कि परमेश्वर की महिमा कलीसिया से उठ चुकी है? इस कारण परमेश्वर की महिमा का उत्पाद करने के लिए आज के युग में हमे नकली लाइट और धुएं की जरूरत होती है। पलिश्ती उस महिमा को ले गए हैं। सिर्फ एक स्त्री जो मरने की अवस्था में है यह जान गयी कि परमेश्वर की महिमा इस्राएलियों के ऊपर से हट गयी है। उसके ससुर को इस बात की चिन्ता है कि वाचा का संदूक सुरक्षित है या नहीं और बहू को परमेश्वर की महिमा की चिन्ता है। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि कम से कम एक जन को तो इस बात का ख्याल था। हम किस बारे में सोचते है - रीति-रिवाज़ के द्वारा खुद का काम बन जाए या परमेश्वर की महिमा? यही बात परमेश्वर भी पूछते हैं। क्या हम परमेश्वर की महिमा के विषय सोचते हैं?

1 शमूएल 5:1-5

[1]और पलिश्तियों ने परमेश्वर का संदूक एबनेज़ेर से उठाकर अशदोद में पहुंचा दिया; [2]फिर पलिश्तियों ने परमेश्वर के संदूक को उठाकर दगोन के मंदिर में पहुंचाकर दगोन के पास धर दिया। [3]बिहान को अशदोदियों ने तड़के उठकर क्या देखा, कि यहोवा के संदूक के सामने दागोन औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है। तब उन्होंने दगोन को उठाकर उसी के स्थान पर फिर खड़ा किया। [4]फिर बिहान को जब वे तड़के उठे, तब क्या देखा, कि दागोन यहोवा के संदूक के सामने औंधे मुंह भूमि पर गिरा पड़ा है; और दगोन का सिर और दोनों हथेलियाँ डेवढ़ी पर कटी हुई पड़ी है; निदान दागोन का

केवल धड़ समूचा रह गया। [5]इस कारण आज के दिन भी दगोन के पुजारी और जितने दगोन के मंदिर में जाते हैं, वे अशदोद में दगोन की डेवढ़ी पर पाँव नहीं धरते।

क्या आप इस बात को समझ रहें हैं? परमेश्वर यहाँ क्या कहना चाह रहें हैं? मैं एक ट्रॉफी(trophy) के समान प्रदर्शित नहीं होऊंगा। तुम मुझे एक खुशकिस्मत के प्रतीक के समान इस्तमाल नहीं कर सकते। अन्य देवताओं की सूचि में तुम मुझे नहीं शामिल कर सकते। मैं प्रदर्शित होने वाली वस्तु नहीं हूँ। पलिश्तियों, तुमने यह सोचा कि मैं तेरे देवता की सेवा करूंगा? जिस पर तुम भरोसा रखते हो मैं उसे मिटा दूंगा। जिस देवता की तुम उपासना करते चले आये हो और मुझे भी ऐसा करवाना चाहते हो, उसी देवता का मैं न्याय करूंगा। धन और प्रसिद्धि दिलाने वाले दागोन देवता का न्याय होगा। उस समय पलिश्तियों के पास दो विकल्प थे। पहला: यहोवा के संदूक को वापस इस्राएलियों के खेमे में पहुंचा दिया जाए; और उन्होंने ऐसा करना ही उचित समझा क्योंकि उनके खेमे में न्याय बहुत ही कड़े रूप में हो रहा था। और दूसरा विकल्प यह था: हमारे देवता का सिर और हाथ टूट गया है तो फिर हम इसकी उपासना क्यों करे? इसे छोड़कर हमें इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करना चाहिए। पर किसी ने यह चुनाव नहीं किया। कोई यह चुनाव नहीं करता है। कितने लोग पवित्र शास्त्र को उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक पढ़ चुके हैं? वे लोग 31 दिसंबर की रात को आकर कहते है कि हमने 50 बार पवित्र शास्त्र उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक पढ़ा है। ऐसा करने से तुम्हारे जीवन में क्या परिवर्तन आया? क्या आपने परमेश्वर के सिद्धांतों को समझा? पवित्र शास्त्र का मुख्य बिंदु विद्रोही सन्तान नहीं बल्कि परमेश्वर के सिद्धान्तों के प्रति आज्ञाकारी संतानों का निर्माण करना है। **इसलिए परमेश्वर पहले वचन के द्वारा बातें करता है, और यदि वचन को न माने तो फिर वो छड़ी का उपयोग करता है और अगर छड़ी से भी न माने तो अपने तलवार को भेजता है ताकि विद्रोह को समाप्त कर सके।** पवित्र शास्त्र को 50 बार पढ़ने का क्या फ़ायदा अगर आपने अपने अन्दर परमेश्वर के वचन के ख़िलाफ़ जो विद्रोह है उसे ख़त्म नहीं किया हो? नहीं, मैं यहोवा के संदूक को वापस भेज दूंगा और टूटे हुए दगोन को अपने पास रखूँगा क्योंकि इसे जोड़ा जा सकता है और ये हमारे काम में ज्यादा दखल नहीं देता। देखिए, दागोन और प्रसिद्धी/धन दिलाने वाले देवताओं के साथ समस्या यह है कि वे हमे हमारे पापों के विषय अपराध-बोध नहीं कराते हैं। इसलिए ये अच्छे है। यह रहने के लिए एक अच्छी जगह है। यहाँ पापों का अपराध-बोध करने की जगह नहीं है। जब भी सच्चा परमेश्वर आता है, यशायाह कहता है, "धिक्कार है मुझ पर; मैं एक अशुद्ध होठों वाला मनुष्य हूँ।" अगर मछली पकड़ने की बात हो तो पतरस जानता है कि यह परमेश्वर ही हो सकता है और वह कहता है, "मेरे पास से चले जाइए। मैं एक पापी मनुष्य हूँ।" जहाँ कहीं भी सच्चा परमेश्वर आता है, वहां लोग अपने अपराधों का अंगीकार करते हैं। जक्कई भी खड़ा होकर बोलता है, "हे मेरे प्रभु!" वहाँ न कोई प्रचार हो रहा था, न कोई चंगाई सभा, न आश्चर्यकर्म, कुछ भी नहीं; उसने सिर्फ यीशु को बैठकर खाना खाते हुए देखा। बस इतना ही काफी है। और ज़क्कई क्या कहता है? "मैं अपनी आधी संपत्ति गरीबों को दे दूंगा, और जिनसे नाहक लिया है उन्हें चौगुना वापस फेर दूंगा।" यीशु कहते हैं, "यह अच्छा है, तुम्हारे घर में आज उद्धार आया है।" हर स्थान में जहाँ जीवित परमेश्वर या परमेश्वर का जीवित वचन आता है, वहाँ लोग कायल होते हैं, अपने गुनाहों को मानते हैं। जहाँ लोग कायल नहीं होते, वहाँ प्रचार झूठा है। पवित्र आत्मा का प्रमुख कार्य हर रविवार,हर बुधवार को हमें हमारे पापों के प्रति अपराध-बोध कराना है और हमें धार्मिकता की ओर ले जाना है। यीशु ने कहा कि सच्चाई का आत्मा ऐसा ही करेगा। हमें खुश रखने के लिए नहीं। यह झूठा आनंद नहीं देता।

पौलुस कहता है कि जब तक तुम्हारी आज्ञाकारिता पूरी न हो जाए और यही पर इस्राएली असफल हुए और यही पलिश्ती भी हार गए, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय भेजा। जब पलिश्तियों के खेमे में न्याय भेजा गया, तब हमारे भीतर में बसे संसार का न्याय होता है। हम क्या करते हैं? हम अपने मूर्तियों को कसकर पकड़ते है और वाचा के संदूक को अपने से दूर भेज देते हैं। क्या यह बात हम परमेश्वर की संतानों के लिए भी सत्य नहीं है? **जब परमेश्वर वास्तव में हमारे पापों के विषय हमें जाँचते है और हमारे ह्रदय को भेदते है तो हम इतने क्रोधित हो जाते है कि**

परमेश्वर को हमारे जीवन से चले जाने के लिए कहते हैं और अपनी मूर्तियों को थाम लेते हैं। क्या राहेल ने ऐसा ही नहीं किया? वह 20 वर्ष याकूब के साथ रही। याकूब उससे इतना प्रेम करता था कि उसके लिए उसने 14 वर्ष मजदूरी की। राहेल ने युसूफ को जन्म दिया और दूसरे की भी उम्मीद लगाई हुई थी। और वो अपने पिता के मूर्तियों के ऊपर बैठी थी। उसके पिता ने उसके पति के साथ कैसा व्यवहार किया था? 10 बार याकूब को धोखा दिया। और राहेल किन पर बैठी हुई थी? अपने पिता के मूर्तियों के ऊपर। इसलिए अब वह उन्ही मूर्तियों के साथ मर जायेगी। अनजाने में उसके पति के द्वारा बोले गये शब्द राहेल के लिए घातक सिद्ध हुआ। जो कोई भी मूर्ति के साथ मिलेगा तो वो मर जाएगा। इसलिए राहेल बिन्यामिन को जन्म देकर मर गई। क्योंकि वह अपने पिता के मूर्तियों से चिपकी रही। परमेश्वर कहते है, "मैंने याकूब को तो हारान से निकाल लिया परन्तु राहेल तुझे न निकाल पाया।" इनका बाइबिल में सबसे अनोखी प्रेम कहानी थी। परन्तु राहेल ने कभी भी याकूब के परमेश्वर से प्यार नहीं किया। वह विद्रोही थी और परमेश्वर कहते है, "मैं तौभी याकूब के घराने, इस्राएल के घराने में विद्रोह से निपटूंगा।" हमारे जीवन में कितने पाप है इससे परमेश्वर को फर्क नहीं पड़ता। पर जब जब परमेश्वर हमें कायल या अपराध-बोध कराते हैं तब हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? क्या हम अपने ह्रदय में छुपे विद्रोह को जाँचते हैं?

इस व्यक्ति को देखिए। तीन बार बड़ी कठोरता के साथ परमेश्वर ने उसके साथ व्यवहार किया। वो व्यक्ति दाऊद है। पहली बार इस पुरुष ने ऐसा काम किया जिसे किसी भी परमेश्वर के जन चाहे पुरुष या स्त्री को नहीं करना चाहिए था। वह पलिश्तियों के खेमे में गया जहाँ वह एक पलिश्ती के समान रहा, अनेक बेगुनाह लोगों को मारा और एक झूठा विवरण पलिश्तियों के राजा को दिया और पलिश्तियो के मध्य बहुत चर्चित व्यक्ति(हीरो) बन गया। इसके बाद उसने अपनी पत्नी एवं अपने बच्चों के लिए बेहद सुन्दर नगर का निर्माण किया जिसका नाम उसने सिकलग रखा। उसने अपने लिए एक शरण स्थान बनाया ताकि अगर परमेश्वर असफल हो जाए तो कही जाने की जगह तो होगी। कुछ विश्वासी भी इसी प्रकार से चलते हैं। वे विश्वास से चलते तो है परन्तु बैंक में करोड़ों रूपए भी संग्रह करके रखते हैं। दाऊद के लिए सिकलग एक बैंक की तरह था। परमेश्वर कहते हैं, "मैं सिकलग को जला डालूँगा। मेरे पास तुम्हारे लिए एक योजना है। मैं तुम्हारे मन के अन्दर के विद्रोह तोड़ दूंगा। तुम पलिश्तियों के खेमे में इसलिए चले गए क्योंकि तुमने मुझ पर भरोसा नहीं रखा और शाऊल को देखा और कहा, "ओह! शाऊल मुझे मार डालेगा।'' अभी तक जब वे तुम्हारा पीछा कर रहे थे तो तुम मुझसे सलाह ले रहे थे तो अब क्या हुआ, तुम इतना डर गए कि शाऊल तुम्हे मार डालेगा। तुमने अपने दिशा का नियंत्रण परमेश्वर को न देकर शत्रुओं के हाथों में सौंप दिया।" इस कारण सिकलग जला दिया गया, उसके पत्नी और बच्चों को बंदी बना लिया गया, और दाऊद के सिपाही उससे बहुत क्रोधित हुए। कुछ हज़ार सैनिक उसके बहुत विश्वासयोग्य थे मगर वे भी उस पर गुस्से से पागल हुए जा रहे थे। पवित्रशास्त्र बताता है कि उन्होंने दाऊद को मारने के लिए पत्थर तक उठा लिया था। दाऊद के जीवन का वो सबसे अंधकारमय दिन था। इसी दौरान दाऊद का व्यक्तित्व सामने निकल कर आया। इस व्यक्ति ने अपने आपको परमेश्वर में दृढ किया। उसने एब्यातार याजक से एपोद लाने को कहा। वो परमेश्वर से सुनना चाहता था। वो एक विद्रोही नहीं है। परमेश्वर कहते हैं, "तुमने विद्रोह नहीं किया, इसलिए मैं तुमसे बात करूँगा। पीछा करो, जयवन्त हो, और वापस ले लो।" <u>पवित्रशास्त्र बताती है कि दाऊद ने पीछा किया, उन पर हावी हुआ और सब कुछ जो ले लिया गया था उसे वापस प्राप्त किया क्योंकि उसके मन के अन्दर का विद्रोह टूट गया था।</u>

दूसरी बार, जब राजा को लड़ाई के लिए जाना चाहिए था, दाऊद अपने छत पर गया, वहाँ से एक ख़ूबसूरत स्त्री को नहाते हुए देखा, उसे जबरन अपनी पत्नी बनाया, वह गर्भवती हुई, सब बातों को ढापने के लिए दाऊद ने उसके पति को मार डलवाया। इस बार परमेश्वर ने उसके पास नातान नबी को भेजा और कहा, "तुम यह पुरुष हो। यह मेरा न्याय है। तुम्हारे घर से अब कभी भी तलवार अलग नहीं होगा। तुम्हारे बच्चे तुम्हारे साथ ऐसा करेंगे।" दाऊद सारी

बातें सुनता है और कहता है, "मैंने परमेश्वर के विरोध पाप किया है।" परमेश्वर ने कहा, "तुम्हारे पाप क्षमा किये गए।" तुममे विद्रोह नहीं है। अब दाऊद ठीक है, शक्तिशाली है, और वह एक राजा है।

तीसरी बार वो शत्रु से उत्तेजित होकर गणना करता है। परमेश्वर उससे क्रोधित हुआ, "तुमने यह गणना क्यों किया? क्या तुम्हारी जीत संख्या के कारण हुई या मैंने तुम्हे जीत दिलाई? और परमेश्वर ने तीसरा नबी उसके पास भेजा जिसका नाम गाद था। गाद ने कहा, "परमेश्वर राजा से यों कहता है, मैं तुम्हे तीन विकल्प देता हूँ। पहला विकल्प - यह न्याय है। दूसरा- यह न्याय है। तीसरा- यह न्याय है। तुम्हे कौन सा मंज़ूर है?" वह कहता है, "जो परमेश्वर चाहे। परमेश्वर मेरा न्याय करे।" अब क्या आप समझें कि परमेश्वर दाऊद से इतना प्रेम क्यों करता है? परमेश्वर कहते हैं, "इस पुरुष में विद्रोह नहीं है। उसने अपने जीवन में मेरे न्याय को आने दिया। मैं उससे निपट सकता हूँ। मैं उसकी मरम्मत कर सकता हूँ। जब मैं उसका न्याय करता हूँ तो वह मुझसे क्रोधित नहीं होता। वह कुढ़ता नहीं। वह मेरे न्याय से प्रसन्न होता है क्योंकि वो मेरे साथ चलता है।" परन्तु इस्राएल के विषय में प्रभु कहता है, "पूरे दिन मैं तुम्हारे सामने अपना हाथ पसारे रखा, पर तुम अपने पूर्वजों के समान हो, हठीले लोग हो। तुम मेरे सुधार को ग्रहण नहीं करते। तुम सिर्फ मेरा इस्तमाल करना चाहते हो। तुम मुझे ट्रॉफी और खुशकिस्मत के प्रतीक के समान इस्तमाल करना चाहते हो।"

परमेश्वर कहते हैं, तुम इधर-उधर "मैं यीशु से प्रेम करता हूँ" का लेबल लगाकर रखते हो। अपने गले में क्रूस वाली चेन लटकाते हो, "यीशु आपसे प्रेम करता है" का स्टीकर अपने गाड़ी में लगते हो, परन्तु आपके ह्रदय में क्या है? एक बार एक ट्रैफिक पुलिस ने एक स्त्री से कहा कि वह लाल बत्ती को अनदेखा करके अपनी गाड़ी आगे नहीं ले जा सकती है। इस पर उस महिला ने उसे उल्टा सीधा कहा और अपशब्द भी इस्तेमाल किया और अपने हाथों से अपनी प्रक्रिया ज़ाहिर किया। उस पुलिसकर्मी ने उसकी गाड़ी की ओर इशारा किया। उस स्त्री ने पूछा, क्या कहना चाहते हो?" उसने कहा, "आपके गाड़ी में जो स्टीकर लगा है, उसमे लिखा है, "यीशु मेरा प्रभु और रक्षक है।" इसी तरह शत्रु भी हमारी तरफ इशारा करके कहता है कि हमारे ह्रदय में क्या है। आत्मिक स्तर या दायरे में कुछ भी छुपा हुआ नहीं है। आप एक विद्रोही हैं। यहोवा के संदूक को खेमे में लाकर यह मत कहो, "परमेश्वर उठ और तेरे शत्रु तितर बितर हो जायेंगे।" परमेश्वर कहते हैं, "तुम्हे उसके लिए मूसा जैसा होना होगा, यहोशू होना होगा, पौलुस, पतरस के समान बनना होगा। उन्हें मैं जानता हूँ, मैं पतरस को जानता हूँ, मैं पौलुस को जानता हूँ, और मैं यहोशू को भी जानता हूँ।

इसी बात में वो असफल हुए। पलिश्तियों के पास भी एक विकल्प था। नीनवे में क्या हुआ? क्या उन्होंने अपने देवताओं को गिरते हुए देखा? क्या उन्होंने अपने देवताओं के सिर टूटते या हाथ टूटते देखा? नहीं, उन्होंने क्या देखा? उन्होंने एक व्यक्ति को मछली के पेट से निकलते हुए देखा जिसने कहा, "40 दिन और इसके बाद नीनवे का अन्त हो जाएगा" और एक कुत्ते से लेकर राजा तक सभी उपवास में चले गए। इसलिए, ऐसा नहीं है कि पलिश्ती मन नहीं फिरा सकते थे, मगर उन्होंने ऐसा करने से इनकार किया और उन्हें अपने देवताओं से चिपके रहना बेहतर लगा। जबकि नीनवे ने मन फिराया और परमेश्वर ने उन्हें क्षमा किया। और योना नबी गुस्से में था क्योंकि परमेश्वर ने नीनवे का न्याय नहीं किया। परमेश्वर ने कहा, "तुम मुझे नहीं समझते। मैं चाहता हूँ कि लोग अपना मन फिराएं। मैं सब पर न्याय लाना नहीं चाहता। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे समान बनो।" परमेश्वर यही चाहते हैं। जवान लोग, बुज़ुर्ग लोग, परमेश्वर आपके ह्रदय को अभी देख रहे हैं। क्या तुम वो पुरुष, वो स्त्री, वो बच्चे हो जिससे मैं बातें कर सकता हूँ, जिसमे मैं सुधार ला सकता हूँ, जो मेरे वचन को नहीं बदलते। शमूएल ने परमेश्वर की सेवा शुरू की जब वह तीन वर्ष का था। जब वो बूढ़ा हो गया और मरने पर था, उसने लोगों की आखों में देखकर यह बोल पाया, "क्या तुम्हारे पास मेरे विरोध में कोई बात है?" तब सबने कहा, "हमारे पास आपके बच्चों के ख़िलाफ़ शिकायत है परन्तु आपके विरोध में कुछ भी नहीं है। आपने हमे धोखा नहीं दिया। आपने हमसे कुछ नहीं लिया। आपने वचन को नहीं बदला।

परन्तु लोगों को अब एक राजा चाहिए था। वह राजा कौन था? हम इसे अगले हफ्ते देखेंगे पर मैं थोड़ा सा पूर्वसमीक्षा देना चाहता हूँ। शाऊल का अभिषेक किया गया, परन्तु वह नष्ट हो गया। बहुत से लोग अपनी देह से संघर्ष किए बिना ही अभिषेक चाहते है। जब देह(flesh) अभिषिक्त होता है, तब आप पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से इधर उधर दौड़ धूप करेंगे और अंत में आप पूरी तरह बर्बाद हो जायेंगे। यूहन्ना का अभिषेक हुआ, वह निर्जन देश से निकल कर बाहर आया, मगर अभिषेक ने उसे बर्बाद नहीं किया। यीशु ने कहा कि बहुतेरे मेरे पास उस दिन आएंगे और कहेंगे, "प्रभु!, प्रभु! हमने आपके अभिषेक में ये सब किया।" परन्तु परमेश्वर कहेंगे कि तुम्हारे अन्दर का शाऊल का अभिषेक हुआ था, न कि दाऊद का। तुम शरीर के अनुसार चलते हो। तुमने पवित्रशास्त्र का इस्तमाल करके मुझे तुम्हे अभिषेक करने को कहा। तुमने कभी भी अपने देह से नहीं निपटा। और मैंने तुम्हारा अभिषेक इसलिए किया क्योंकि तुमने इसकी मांग रखी। वो शाऊल का अभिषेक था। यह तुम्हे कहाँ ले गया? यह तुम्हे बर्बादी की ओर ले गया। तुमने अभिषेक लेकर उसे अधर्म के लिए उपयोग किया। परमेश्वर इसे अधर्म करने वाले कार्यकर्ता कहा है। प्ररितों के काम की पुस्तक के अनुसार पवित्र आत्मा उन्हें दिया जाता है जो आज्ञाकारी हैं। अभिषेक मांगने से पहले हमें अपने आप से यह पूछना जरूरी है, मुझे अभिषेक क्यों चाहिए? किस कार्य के लिए? आज्ञाकारी होने के लिए या परमेश्वर की नुमाइश करने के लिए चाहिए। परमेश्वर **के लिए** इस्तमाल होने के लिए या परमेश्वर **को** इस्तमाल करने के लिए? आप अभिषेक को इन दोनों में से किसी भी कार्य के लिए उपयोग कर सकते हैं। पौलुस अपने एक पत्री में कहता है कि यीशु मसीह के पुनरुथान होने के बाद करीबन 500 से ज्यादा लोगों ने उन्हें देखा। पेंतिकुस्त के दिन 120 लोग थे। वे दस दिन तक इंतज़ार किए। उन दस दिनों तक वे एक चित और एक मन के थे। तब परमेश्वर ने उनका अभिषेक किया। उनमे से एक भी व्यक्ति स्वार्थी नहीं था। परमेश्वर ने उनसे कहा, तुम्हारा अभिषेक हुआ है; यह अभिषेक तुम्हे बर्बाद नहीं करेगा, जाओ। सभी अभिषेक प्राप्त करना चाहते हैं। सबको पवित्र आत्मा में बप्तिस्मा प्राप्त करने की इच्छा होती है। वे यह नहीं चाहते कि इस बपतिस्मे के द्वारा शरीर के काम निष्क्रीय किया जाए। वे उस शरीर के ऊपर अभिषेक चाहते हैं। वे इस अभिषेक के साथ संसार में दौड़ते है और उस अभिषेक को इस संसार के लिए इस्तमाल करते हैं। और परमेश्वर कहते हैं कि ये शाऊल का अभिषेक है। इस तरह का अभिषेक में कोई सामर्थ नहीं होती है जो तुम में बदलाव नहीं ला सके। शमूएल ने अभिषेक के लिए तेल कहाँ से लिया? एक कुप्पी(flask) से। उसके पास एक तेल से भरी कुप्पी थी। उसे में से थोड़ा सा तेल निकालकर उसका अभिषेक किया। वो तेल जिससे शमूएल ने दाऊद का अभिषेक किया वो कहाँ से लिया गया? सींग(horn) से। यह परमेश्वर की सामर्थ को दर्शाता है, परमेश्वर का हाथ उसके ऊपर है- यह इसका चिन्ह है। दोनों एक जैसा नहीं है। सींग से अभिषेक मिलने पर चौकस रहें। परमेश्वर मेरे उद्धार का सींग है। यह अभिषेक आपके विद्रोह को रोक कर रखता है। हमें शरीर में अभिषेक नहीं चाहिए। नहीं तो आप वाचा के संदूक को खेमे में ले जायेंगे और शत्रु के द्वारा हर युद्ध में बुरी तरह पराजित किये जायेंगे। और आप फिर बाद में परमेश्वर से पूछते भी नहीं है और न ही अपने आपको जांचते हैं कि मैं युद्ध में क्यों हार रहा हूँ? फिर हम सोचने लगते हैं कि मैं अगले दो पदों को परख कर देखता हूँ। परमेश्वर कहते हैं कि तुम वचन को दूसरों के विरुद्ध इस्तेमाल करते हो मगर खुद पर नहीं। यह इस तरह से काम नहीं होता। **पहले परमेश्वर का वचन हमे जाँचता है और तब हम खुद को परमेश्वर के वचन के अनुसार अनुशासित करते हैं।** इसमें सामर्थ इसी प्रकार से है। अपने चारों ओर चीजों को होता हुआ देखकर यह न सोचें कि सब कुछ प्रभु की ओर से है। न्याय शुरू हो चुका है। बड़ी बड़ी सेवाकाईयाँ, जाने-माने प्रतीक सब बिक रही हैं। सब दिवालिया हो रहें हैं। क्रिस्टल कैथेड्रल फिर समाचार पत्रों में है। उन्हें उसे बेचना पड़ा। यह अमरीका में मसीही धर्म का प्रतीक था। वह बिक गया। उन सेवकाईयों का क्या हुआ जो दिवालिया हो गयीं हैं? वे काम करने वालों की छटनी क्यों कर रहे हैं? ओह, मैं नहीं जानता था कि आकाल परमेश्वर पर भी पड़ सकता है। वास्तव में जब मैं परमेश्वर के वचन को पढ़ता हूँ, तो पाता हूँ कि आकाल के समय में परमेश्वर ने 100 गुना फसल काटा। "माफ़

कीजिएगा, कम राशि होने के कारण हमे मजदूरों को छाटना पड़ रहा है।" इस तरह की सेवकाई झूठ पर आधारित थी। अंत होने से पहले हर एक झूठ उजागर किया जायेगा। हर एक बातों का न्याय होगा। हर चीज उजागर किया जायेगा।

आत्मिक मनुष्य हर एक चीजों का न्याय करता है, ताकि वह खुद न जाँचा जाए। वो व्यक्ति(पुरुष या स्त्री) हमेशा परमेश्वर के सन्मुख अपने आप को उपस्थित करता है और कहता है कि परमेश्वर उसे परिवर्तित करे, ताकि जब वो परमेश्वर के सामने खड़ा हो, तो उससे पहले वो अपना न्याय कर चुका होगा और परमेश्वर के सामने हियाव के साथ खड़ा हो पाएगा। पवित्रशास्त्र यह भी बताता है कि बहुतेरे लज्जित होंगे। वे चुपके से स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। वे परमेश्वर से अपनी नज़रे नहीं मिला पाएँगे। यह वचन की सच्चाई है। कोई आपको बेवक़ूफ़ न बनाने पाए। जब आप वचन पढ़े तो उत्पति 1 से प्रकाशितवाकय तक पूरा पढ़ें। परमेश्वर के वचन के एक अच्छे विद्यार्थी बने।

जंगल में परमेश्वर का भवन/वेदी बनी। दाऊद के द्वारा वेदी बनी। सुलेमान का मन्दिर बना। ज़ेरुबाबेल का मंदिर बना। हेरोदेस का मंदिर बना। वो मंदिर जो आने वाला है, उस मन्दिर को येहेजकेल ने दर्शन में देखा था। अगर आप ध्यान से पढ़ें तो पता चलेगा कि येहेजकेल ने जो देखा वो मंदिर, हम ही हैं। उसमे लम्बाई और चौड़ाई का वर्णन नहीं है। उसमे तीस कक्ष हैं और जैसे जैसे वह मंदिर परमेश्वर की तरफ ऊपर की ओर बढ़ रहा है वह और चौड़ा होता जा रहा है। शुरुआत में यह सकरा होता है, लेकिन जैसे ऊपर की ओर बढ़ता है यह चौड़ा होता चला जाता है। इसी सकरे मार्ग पर चलने की आपकी बुलाहट हुई है। **जब आप चलना शुरू करते है तब यह सकरा होता है पर जैसे जैसे हम अपने आप को जांचते जाते है, तो यह मार्ग चौड़ा होता जाता है। तो परमेश्वर के साथ चलना आसान है।** यही वो मंदिर है जिसका निर्माण परमेश्वर कर रहें हैं।

चार मंदिर हैं। चौथा बनाया जा रहा है। हम सब जीवित पत्थर है और हम उस मदिर में लगाए जाने के योग्य होने के लिए तराशे जा रहा है ताकि परमेश्वर हममे खुद वास कर सके। यह परमेश्वर का वचन है। यही सुसमाचार है। यह कोई बकवास नहीं है जो हम सुन रहे हैं। हर एक मनुष्य को एक जीवित पत्थर में बनाया जा रहा है ताकि हम अच्छी तरह से परमेश्वर के मंदिर के योग्य बन सके। सुलेमान ने जो मंदिर बनाया, उसके लिए पत्थर कहाँ तराशा जा रहा था? वे ओर्नान के भट्ठे में तैयार किये गए थे। पतरस और इफिसियों की पत्री में यह बताया गया है कि हम सब पत्थर है जिसे परमेश्वर सही आकार दे रहे है ताकि हम उसके मंदिर में अच्छे तरीके से लग सके। कोने सिरे का पत्थर प्रभु यीशु मसीह है। इस मंदिर की नींव यीशु मसीह है जो देहधारी होकर आये और इस मन्दिर का अन्त भी यीशु मसीह में समाप्त होता है जो आत्मा में है। और तब मंदिर का निर्माण पूरा होगा। हमारा जीवन इसी पर आधारित है। हे प्रभु, मैं एक ऐसा पत्थर बनना चाहता/चाहती हूँ जो आपके मंदिर में फिट हो सके। येहेजकेल 43 और 44 पढ़े और जाने कि मन्दिर कैसे बना है। कोई इस बारे में बात करना नहीं चाहता क्योंकि हमारे स्वाभाविक देह को इससे दुःख होता है। यह इस संसार में हानि उठाने के लिए कहता है। यीशु के साथ चलने के लिए एक दाम चुकाना पड़ेगा। ओह! नहीं, नहीं, नहीं, यह मत कहिए। लोगों को बुरा लग सकता है। परमेश्वर कहते है कि शरीर को हमेशा यह बातें बुरी लगेगी। परन्तु जो लोग इन बातों के प्रति वास्तव में गंभीर है, वे अपने दोनों हाथों से लपक कर कहेंगे, "मैं इसे ही ढूँढ रहा था। यह सत्य है। यह ठोस है। यही तो मैं बनना चाहता था। परमेश्वर मुझे अपने मंदिर का एक जीवित पत्थर बनाइए। मुझे आकार दीजिए। मुझे तराशिए और अपने मंदिर में नीचे या ऊपर स्थापित कीजिए। मैं खुद को पूरी रीति से टूटने के लिए और तराशने के लिए आपके हाथों में सौंप देता हूँ ताकि मुझे आप अपनी मर्ज़ी के अनुसार बनाएँ। मैं आप पर न तो हुक्म चला रहा हूँ, न ही आपको ट्रॉफी या खुशकिस्मत के चिन्ह के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ। मैं आपको परिचित वस्तु या उपेक्षा की वस्तु के समान उपयोग नहीं कर रहा हूँ।"

जब वाचा के संदूक पर कब्ज़ा कर पलिश्तियों के खेमे में ले जाया गया, तब जिसने भी उसे झाँक कर देखने की कोशिश की, उसकी मृत्यु हो गयी। परमेश्वर कोई जिज्ञासा की वस्तु नहीं है। कोई भी परमेश्वर को बिना शुद्ध हुए नहीं देख सकता। यानि यीशु मसीह के लहू के द्वारा शुद्ध हुए बिना नहीं देख सकता है। परमेश्वर द्वारा दिए गए

रूपरेखा चाहे पुराना नियम हो या नया नियम की पुस्तक हो ,परमेश्वर कहते है कि यह एक सा है। परमेश्वर से परिचित मत होइए बल्कि परमेश्वर के करीब आइए तो परमेश्वर भी आपके करीब आयेंगे। हारून के पुत्रों ने अपने आपको बिना शुद्ध किये परमेश्वर के पास आने की कोशिश की, और परमेश्वर ने कहा, मर जाओ। परमेश्वर ने उनके पिता से कहा, यहाँ तक कि उनके लिए विलाप न करो। परमेश्वर ऐसे हैं। वो डरावने नहीं है। अगर आप उनके साथ चलें, तो वे सबसे अदभुत और प्रेमी परमेश्वर है। अगर आप परमेश्वर की अवहेलना करे तो वे पवित्र है और आपका न्याय करेंगे। हमें यह सीखना है कि हम परमेश्वर के वचन को अनुमति दे कि वो हमारे ह्रदय के अवरोधक या बाधाओं को तोड़ सके। विद्रोह के कठोर चट्टान को इसे तोड़ने की अनुमति दें।

जो भी उस चट्टान (यीशु) पर गिरेगा वह टूट जायेगा। और जिस पर भी यह चट्टान गिरेगा वो कुचला जाएगा। मैं टूटना चाहता हूँ। मैं कुचल दिया जाना नहीं चाहता। कुचल दिए जाने से बेहतर टूट जाना है, है न? किसी भी चिकित्सक(सर्जन) से पूछ लीजिये, उनका कहना यही है कि टूट जाना बेहतर है कुचल दिए जाने से क्योंकि जो टूटा हुआ रहता है उसे बनाया जा सकता है। लेकिन जो कुचला गया तो? आप क्या करेंगे? आप कुचल दिए जाना नहीं चाहते हैं। आप टूटना चाहते हैं। आइये प्रार्थना करे:

<u>अंतिम प्रार्थना</u>

हे पिता, हम आपका धन्यवाद करते हैं, हम स्तुति करते हैं प्रभु। हे पिता, हम जब आपके वचन में से ढूंढते हैं तो हमारी सहायता कर की हम आपके उद्देश्य को समझ सकें। आपने कहा है कि आपने हमें अन्धकार में से निकाल कर ज्योति में लाए हैं ताकि हम आपकी स्तुति की घोषणा कर सकें। हम पर्वत पर ज्योति है, तौभी आपने कहा है कि अगर हमारे अन्दर अन्धकार है तो अन्धकार कितनी बड़ी है? आपने गवाही के रूप में अपनी कलीसिया के अलावा इस संसार में कुछ नहीं रख छोड़ा है। बस वही आपकी इकलौती गवाही है। आपने पेन्तिकोस्त के दिन अपनी गवाही 120 स्त्री और पुरुष के हाथों में छोड़ी थी। और आज हमारे समय में, हमारे हाथों में आप कहते हैं, "तुम मेरी गवाही हो।" मुझे इस संसार के देवता के समान मत बनाओ, मैं कोई धन नहीं हूँ। मैं यूनानी देवता दान नहीं हूँ। मैं कोई पियक्कड़ देवता नहीं हूँ। मैं अभिलाषा का देवता, लोभ का प्रभु, इन में से कोई भी नहीं हूँ। मैं परमेश्वर हूँ जो पवित्र है। मैं प्रेम का परमेश्वर हूँ। और जब तक हम आपके वचन को पवित्रात्मा के द्वारा संचालित नहीं करने देते, हे पिता हम कभी भी आपको वास्तव में नहीं देख पाएँगे, हम आपके समान बनना चाहते हैं और अपने आत्मा के द्वारा आप हमे बदलिए। मैं प्रार्थना करता हूँ, हे पिता हर बार, जब भी हम आपका वचन पढ़ते हैं, आपका अभिषेक हमे सत्य सिखाएगा और वो सत्य हमे स्वतंत्र करेगा, जो हमे आपके पुत्र के स्वरुप में बदलने की पुष्टि करेगा। फिर धार्मिकता का पुत्र चंगाई के साथ उनके पंखों तले हमारे जीवनों में उदय होगा। फिर तब सताहट के मध्य में भी, तौभी अगर हमारे आस-पास सब कुछ असफल हो जाए, हम हबक्कुक के समान कह सकेंगे कि मेरे पैर हिरनी के पैर के समान होगा और मेरा परमेश्वर मुझे ऊँचे स्थानों में ले जाएगा। हम डगमगाएंगे नहीं। हम गिरेंगे नहीं। हम सिर्फ उदय होंगे, क्योंकि हमारे ह्रदय में आपने अपना वचन स्थापित किया है। हे प्रभु, आपकी उपस्थिति प्रत्येक के संग हो जो आपके सन्देश को सुने। हमारी सहायता कर, हे परमेश्वर ताकि हम पवित्रात्मा की सामर्थ में आपके वचन के प्रकाश में हम लगातार जी सकें। यीशु मसीह के मधुर नाम में हम मांगते हैं। आमीन।

<u>आशीर्वचन</u>

यीशु मसीह का अनुग्रह, परमेश्वर पिता का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता हम सब के साथ अब से लेकर सदा तक होती रहे। आमीन।

यह सन्देश ग्रेस टेबरनैकल, हैदराबाद, भारत में प्रचार किया गया ऑडियो रिकॉर्डिंग और प्रतिलेख का हिंदी अनुवाद है जिसे आप अंग्रेज़ी में www.gracetabernaclehyd.org से मुफ्त में डाउनलोड कर सकते हैं। जिस प्रकार आपने इस सन्देश के द्वारा आशीष पाई है कृपया कर के इसे दूसरे विश्वासी को देकर आशीषित करें। धन्यवाद। परमेश्वर आपको आशीष दे।